Chap-4

चतुर्थ अध्याय

साठोत्तर हिन्दी व्यंग्य निबंधों में प्रयुक्त विविध भाषिक उपकरणों का चयन

विविध शब्द–चयन

संस्कृतनिष्ठ तत्सम शब्दों का चयन, विदेशी शब्दों का चयन, ग्राम्य शब्दों का चयन, अपशब्दों का चयन, नवनिर्मित या व्यंग्यज शब्दों का चयन।

विविध भाषिक उपकरण

मुहावरें, लोकोक्तियाँ, सूक्तियाँ, परिभाषा, काव्य–पंक्तियाँ तथा पैरोडी–प्रयोग।

चतुर्थ अध्याय

साठोत्तर हिन्दी व्यंग्य निबंधों में प्रयुक्त विविध भाषिक उपकरणों का चयन

विसंगतियों के सम्प्रेषण की दिशा में जब व्यंग्यकार अनेक भाषिक उपकरणों का सटीक प्रयोग करता है तब अभिव्यक्ति-कौशल्यजन्य व्यंग्य भाषा के विविध मुद्राओं के रूप में उसकी भाषा प्रस्फुटित होने लगती है। वह विसंगतियों के स्वरूप, उद्देश्य के अनुरूप अपनी व्यंग्य भाषा का प्रयोग करता है। शब्दों से लेकर वाक्य तक, भाषिक उपकरणों के अनेक तीखें-मीठें रूपों का वह उसी प्रयोजन के लिए उपयोग करता है। विविध भाषा के शब्द, लोकोक्ति, सूक्ति या मुहावरेदार भाषा तो कहीं विविध भावों या विचारों या प्रसंगों के अनुरूप काव्यपंक्तियाँ या पैरोडी-प्रयोग व्यंग्य की सशक्त अभिव्यक्ति के लिए करता है।

वविध शब्द-चयन

व्यंग्यकार, व्यंग्य-भाषा को अर्थव्यंजक तथा प्रभावपूर्ण बनाने के लिये भाषा के के बहुमूल्य भंडार से शब्दों तथा वाक्यों का चयन करता हैं। "चयन-विवेक रचनाकार की अन्यतम मौलिकता है। जैसे चतुर माली सुगन्धित और सुशोभन कुसुमों को ही माला के लिए चुनता है, वैसे ही सावधान व्यंग्यकार अन्य पर्यायों के रहते हुए भी विवक्षित अर्थ को प्रकाशित करने वाले किसी विशिष्ट शब्द का चयन करता है, अनुरूप मुहावरों की पेशकश करता है और सादृश्यविधान, विशेषणादि का उपयुक्त विनियोग करता है। व्यंग्यभाषा में चयन की विलक्षणता ही व्यंग्य की अर्थव्यक्ति, संरचना एवं श्रुतिपेशलता के धरातल पर औदात्यगर्भ, ध्यन्यात्मकता और अर्थ की सूक्ष्मता के सम्मिलित सम्प्रेषण के लिए व्यंग्यकार अपनी भाषा की बहुमुखी शब्द-सम्पदा से सही शब्दों का चयन करता है।"[1]

व्यंग्यकार तत्सम, ग्राम्य अथवा आँचलिक तथा विदेशी शब्दों के उपरांत व्यंग्यज या नवनिर्मित शब्दों का चयन करता है। शब्दों के सही चयन से व्यंग्य निबंधों की भाषा नवीन शैलीय रूपों में निखर उठी है। व्यंग्य भाषा की चयन - प्रकृति को निम्न विवेचत रूपों में देखा जा सकता है।

संस्कृतनिष्ठ तत्सम शब्दों का चयन

अनेक व्यंग्य निबंधकारों ने व्यंग्य को सम्प्रेषित करने के लिए संस्कृतनिष्ठ तत्सम शब्दावली और संस्कृत के श्लोंकों तथा सूक्तियों का प्रयोग किया है। इसके कुछ उदाहरण यहाँ पर दृष्टव्य है।

भारत कृषि प्रधान देश है, फिर भी अन्न के लिए उसे दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है। इस पर व्यंग्य करते हुए हरिशंकर परसाई लिखते हैं - "शस्य-श्यामला" भूमि के वासी भारत-भाग्य-विधाता से प्रार्थना करते हैं कि इस साल अमेरिका में गेहूँ खूब पैदा हो और जापान में चावल।"[2]

"अमेरिकी हित पवित्र है। यों तो जगत मिथ्या है, पर सत्य है तो अमेरिकी हित है। अमेरिकी हित अपरिभाषित है। ब्रह्म का जिज्ञासु 'नेति-नेति' करता बढ़ता जाता है। अमेरिकी हित का जिज्ञासु हर बिन्दु पर 'इति-इति' करता है। दुनिया में अगर कोई पुनीत कर्म है तो अमेरिकी हितों की रक्षा। मनुष्यों, सर्वधर्मान्, परित्यज्य मेरी (अमेरिका की) शरण में आओं। में तुम्हारे सब पापों का क्षय करके तुम्हारे जिवन को दिव्य बनाऊँगा। यदि ऐसा नहीं करते तो अधमों, तुम्हारा यह जीवन दुभर हो जायेगा और मृत्यु के बाद यातना भोगोगे।"[3]

ऊपर के उदाहरणों में रेखांकित शब्द तत्सम के हैं। इसी प्रकार -

"सोहाई अब शनैः-शनैः बोरियत में रूपान्तरित हो रहा है।"[4]

"तू तोप है, जहाँ से मैं साहित्यकारों पर प्रहारक गोले छोड़ता हूँ। त्वमेय तोपं, त्वमेह बन्दूकम्, मम तमंचा त्वमेह। ओ मेज कोफी हाउस की, केवल तेरे सहारे मे साहित्यकार बना हुआ हूँ।"[5]

"पवित्रपुण्यसलिला भगवती भागीरथी तथा शेष सरिताओं पर भी अनेक सेतुओं का निर्माण सम्पन्न किया गया। लेखकों और कवियों ने केश बढ़ाना त्याग दिया और नियमित रूप से क्षौर-कर्म सम्पन्न करा कर वे भी जनसाधारण के समकक्ष हो गये। अतिरिक्त शब्दों में लेखकों और पाठकों में जो अन्तर भूतकाल में होता था, वह भी अब समाप्ति को प्राप्त हो गया।"[6]

यहाँ पर सरल हिन्दी के पक्षपाती हिन्दी का प्रयोग किस प्रकार करते हैं, इस पर स्वयं व्यंग्यकार ने अपने ही चरित्र पर व्यंग्य प्रहार किया है।

"प्रकाशक जो है वह सम्पादक से भी बड़ी चीज हे। वह चाहे तो गधे को लेखक क्या सम्पादक तक बना सकता है। प्रकाशक की लीला अपरम्पार है। साहित्य में जो कुछ भी प्रकाश शेष है वह इन्हीं प्रकाशकों के कारण शेष है,

खद्योतसम् आधुनिक कवियों ने कारण नहीं।"[7]

यहाँ पर 'अपरम्पार' और 'खद्योतसम' तत्सम शब्दों द्वारा प्रकाशकों की साहित्य में दखलअन्दाजी करने की वृत्ति पर व्यंग्य किया गया है।

"अंदर की कुरसी पर एक मोटा रजिस्टर लेकर जो सज्जन बैठे थे उन्होंने मुझे अपनी दाण्डिक आँखों से तौला और बोले - श्रीमान्! जाइये और सामने के होटल से दस कप दुग्ध जल शर्करायुक्त पर्वतीय बूटी आसव का आदेश दे आइये फिर आपकी प्रथम सूचना दर्ज कर लेते हैं।"[8]

यहाँ संस्कृत शब्दों के प्रयोग द्वारा अफसर की रिश्वत लेने की प्रवृत्ति पर व्यंग्य किया गया है।

"प्रणाम करो इस अद्भुत स्थितप्रज्ञता को जो बड़े लम्बे अँधेरे के प्रसाद के रूप में इस जाति को मिली है। पश्चिम के लोग, जितनी आँखें अपने यहाँ की उस प्राणान्तक रोशनी से अंधी हो रही हैं, समझ भी नहीं सकते इसको।"[9]

यहाँ पर भारत और अमेरिका की संस्कृति तुलना की गयी है, साथ में भारत में बिजली की धाँधली इतनी है कि दिन में एक दो बार तो चली जाती है। इस पर रेखांकित किये संस्कृत शब्दों द्वारा व्यंग्य प्रहार किया हैं।

"पंडित ने स्वयं साक्षर रहकर लोगो को निरक्षर भट्टाचार्य रखा।"[10]

"वत्स्! कुछ छात्र-दादाओं पर एकाधिक गुरूओं का वरद्हस्त होता है, पुलिस उनसे मिली होती है, नेता भी चुनाव में इसका सहारा लेता है। ऐसे छात्र अप्रतिहत-वृत्ति वाले होते हैं। उनसे बचना चाहिए।"[11]

यहाँ पर गीता-पद्धति का आश्रय लेकर प्रोफेसर, पुलिस तथा छात्र के क्रिया कलापों पर प्रहार किया है।

"सिनेमा देखने के लिए सप्ताह भर पहले से प्रोग्राम बनाकर समूचे मुहल्ले में यह सुसमाचार प्रचारित कर जब कोई नियत समय से डेढ़ घंटे पहले ही अपने घर से महाभिनिष्क्रमणकरता था तब मुहल्ले की समस्त फिलमात्सुक कन्याएँ खिड़की की ओट से उस वीर पुरूष की शोभा निहार कर अपना जीवन सफल करती थी।"[12]

यहाँ लोगों की फिल्म देखने की लोलुपता पर व्यंग्य किया गया है।

"पूज्यवर! आपके मरणोपरान्त हुई शोकसभा के कुछ मार्मिक उद्धारण प्रस्तुत कर रही हूँ। चूँकि 'नैन छिदन्ति शस्त्राणि.....' के आधार पर और वैसे भी अपनी पूर्व-प्रकृतिवश, आप बेताल योनि में यहीं-कहीं विराजमान होंगे, अत: पढ़ने का ब्योंत बैठा ही लेगें।"[13]

"पिछली शासन व्यवस्थाओं की परम्परा को पीछे ढकेलते हुए हमने 'भ्रष्टाचार विकास प्राधिकरण' की स्थापना की है, जो चार सौ बीस सूत्रों के (दूर) गतिमान बनाने की दिशा में हाथी-सा प्रयास है। अगर किसी भी सरकारी कर्मचारी ने विकास प्राधिकरण के विपरित आचरण किया, तो उसे प्रथम सूचना पर ही निलम्बित किया जा सकेगा, ऐसा प्रावधान भी है। अत: निवेदित है कि लोकप्रिय सरकार की अलोकप्रियता के दाग को धोने के लिए आप तन-मन से जुट जाएं, ताकि 'धनागमन' का मार्ग प्रशस्त हो सके।"[14]

यहाँ राजनीति में व्याप्त भ्रष्टाचार जैसी विसंगती पर व्यंग्य प्रहार करने के लिए संस्कृत के शब्दों का प्रयोग किया हैं।

व्यंग्य निबंध में प्रयुक्त संस्कृत निष्ठ (तत्सम) शब्द-समूह के कुछ शब्द :

'अमरत्व', 'अभियान', 'सौन्दर्य', 'मिथ्या', 'मस्तिष्क', 'मनीषि', 'विज्ञप्ति', 'विशेषज्ञ', 'मूल्य', 'आवाहन', 'अन्त्योदय' (हरिशंकर परसाई); 'यथासंभव', 'पाठ्यक्रमेत्तर', 'व्यर्थ', 'आत्मोन्नति', 'विलम्बित', 'क्षितिज', 'अपेक्षाकृत', 'आश्वस्त' (शरद जोशी); 'लोहपथगामिनि', 'गमनागमन-सूचक', 'क्षोर-कर्म', 'चर्मपादुका', 'अस्थिचर्ममय', 'मत्स्योदनभक्षी', 'मेघाच्छन्न', 'संपृक्त', 'क्षत-विक्षत', (रवीन्द्रनाथ त्यागी); 'गवेषणा-भवन', 'भूतोडमी', 'भूय:', 'देवा:', 'इत्यभर:', 'देवयोनी', (श्रीलाल शुक्ल); 'गौरवान्वित', 'विक्षिप्त', 'चिकित्सा', 'व्याधि', 'विषक्त', (लतीफ घोंघी); 'रक्त रंजित', 'दुष्परिणाम', 'सर्वात्कृष्ट', 'आयाचित', 'निरापद', (संसारचन्द्र); 'जिजीविषा', 'वितृष्णा', 'आत्मोपलब्धि', 'मस्तिष्क', 'सम्मोहनावास्था', 'निद्वन्द्व', 'अवशेष', 'नवीनतान्वेषी', (नरेन्द्र कोहली) 'सुषुप्त मातृत्व', 'निष्कम्प', 'संगीतात्मकता' (केशवचन्द्र वर्मा); 'सभ्रान्त', 'क्रन्दन', (अमृतराय); 'निर्वाचन', 'प्रतीक्षारत', 'कार्यान्वित', 'अर्जित', 'छिन्द्रान्वेषण', (शंकर पुणताम्बेकर); 'निद्रित', 'निर्लिप्त', 'नित्य निदंक', 'श्वान देव', 'अस्त्रागार', 'कर्ण-कमल', 'वाक्युद्ध', (सुदर्शन मजीठिया); 'श्रीमान', 'मुद्राकोष', 'कुतर्क', 'वित्तमंत्री', 'क्षीण', (प्रेम जनमेजय); 'वरदहस्त', 'कर्णकटु', 'अभ्यस्त', 'अविछिन्न', 'निर्वाचन', 'धृणास्पद', 'अवहेलना', 'दोषान्वेषी', 'द्वेष', (रोशनलाल सुरीरवाला); 'अन्यान्यों', 'उत्तरार्द्ध', 'सूचित', 'वृथा', 'श्रृंगार', 'कृत्य', (विश्वभावन देवलिया); 'कार्यान्वयन', 'निलंबित', 'परिष्कार', 'पल्लवन', 'अनुपात', (बरसानेलाल चतुर्वेदी); 'प्रजवलनशील', 'कृतघ्न', 'वायूदूत', 'श्वेत', 'सहिष्णु', (मधुसूदन पाटिल); 'उर्वर', 'विराट', 'पाद-पक्षालन', 'आवागमन', 'गन्तव्य', 'कार्यान्वित', 'परिष्कृत',

(रामनारायण उपाध्याय); 'कालान्तर', 'अभिधेय', 'अधिकृत', 'बहिष्कृत', 'विशुद्धालोचना', 'दैनन्दिनी', 'विज्ञापन', (श्याम सुन्दर घोष); 'गर्वोन्नत', 'कनिष्ठ', 'किंकर्तव्यविमूठ', 'अवैधता', (हरि जोशी); 'भर्त्सना', 'प्रत्यक्ष दर्शी', 'निष्कर्ष', 'पुनरूक्ति', (अशोक शुक्ल); 'निर्दलीय प्रत्याशी', 'ऊर्ध्वगमन', 'निर्बाद्यगति', 'कृतार्थ', 'क्रन्दन', 'धूमाच्छादित', (श्रवणकुमार उर्मलिया); 'गर्वोन्नत', 'हीनम्मन्यता', (अमरेन्द्र कुमार) आदि इसी प्रकार के तत्सम रूपीय शब्द प्रयोग है।

संस्कृत पंक्तियों का चयन

"मैंने अपने को इस साठ के बिंदु पर एक योगी की तरह पंद्मासन में बिठा लिया था। मैंने अपने पर काबू पाया। मन की लगा में कसकर अपने हाथ में पकड़ 'सुख दु:ख समेकृत्वा' की योगमुद्रा में आ गया। हर्ष शोक के अतीत! अब जो पहाड़ टूटना है टूट ले।"[15]

यहाँ साठ वर्ष की आयु के पश्चात निवृत हो रहे आदमी की मानसिक स्थिति पर मार्मिक व्यंग्य किया गया है।

"भाषणों के बाद बूँदी के लड्डू बँटे जिन्हे देखकर सबको गणेशजी की याद आने लगी। मोदकप्रियमुदमंगलदाता, विद्यावारिधिबुद्धिविधाता।"[16]

"मैं दो सौ वाट के बल्व की रोशनी में पढ़ता रहता हूँ और मेरा बच्चा नींद में भी प्रकाश ग्रहण करता रहता है। पर जैसे ही हम सोने के लिए बत्ती बुझाते है तो उसकी भारतीय आत्मा तड़पकर उठ बैठती है – "बत्ती जलाओ। बत्ती जलाओ।" भारतीय संस्कृति में सधे हुए मेरे कान सुनते हैं – 'तमसो मा ज्योतिर्गमय।' मैं उसे अन्धकार से प्रकाश में ले जाता हूँ और बत्ती जला देता हूँ।"[17]

ऊपर के दो उदाहरणों में परिस्थिति के अनुरूप संस्कृत पंक्तियों का प्रयोग किया गया है।

"जैसे रस की व्याख्या नहीं की जा सकती, वैसे ही वाइरस की व्याख्या नहीं की जा सकती, इसीलिए जिस प्रकार अन्तत: रस के लिए कहना पड़ा, रसौ वै स:, उसी प्रकार वाइरस के लिए बाध्य होकर करना पड़ता है, रसौ वै स: वैरस:।"[18]

"माना कि शुभस्य शीध्रम करना चाहिए, मगर जहाँ शुभाशुभ के विवेक का अभाव हो, वहां शीध्रम प्राणघातकम् सिद्ध होता है। 'सहसा विदधीत न क्रियाम् अविवेक: परमापदांपदम्'।"[19]

यहाँ इन संस्कृत सूक्तियों के द्वारा जल्दबाजी करने की वृत्ति पर व्यंग्य किया गया है।

"कुर्सी ही 'त्वमेय माताश्च पिता त्वमेव' है।"[20]

राजनीति में आदमी के लिए कुर्सी ही इसकी सबकुछ हो जाती है। इसीको यहाँ पर व्यंजित किया गया है।

"सदा वक्र: सदा क्रुर: सदा पूजामपेक्षते
कन्याराशि स्थितो नित्य जमाता दशमोग्रह:"[21]

इस संस्कृत पंक्तियों के द्वारा व्यंग्यकार ने जमाई को दसवाँ ग्रह माना है।

"राष्ट्र का कल्याण करने वालों में दूसरे स्थान पर विराजमान होते हैं व्यापारी। 'व्यापारे वसति लक्ष्मी' अत: लक्ष्मीजी सदा सहाय होवें, नोटों की झड़ी लगावें। उनके बढ़ते भूगोल में लक्ष्मी-सागर समा जाए। उनका और उनके खातों का बजन बढ़ता जाए।"[22]

सदाय लक्ष्मी के पीछे भागनेवाले व्यापारियों की धनलालसा पर व्यंग्य किया है।

"बड़े शहरों में बुद्धिजीवियों को कॉफी हाउस में बैठकर बहस करने में सुख मिलता है। कहा भी गया है। यदिष्टं तत् सुखम्। यानी जिसे जो प्रिय है, वही उसके लिए सुख है।"[23]

"परीक्षा क्षेत्रे कुरूक्षेत्रे, दीनहीन शिक्षकम्।
युद्धरतं छात्रस्य, किम कुर्वत नयनसुख?"[24]

"इन संस्कृत पंक्तियों के द्वारा परीक्षा होल में हो रही नकल प्रवृत्ति पर व्यंग्य किया गया है।

ऊपर्युक्त उदाहरणों में संस्कृतनिष्ठ तत्सम शब्दों तथा पंक्तियों का प्रयोग व्यंग्य निबंध को और भी अभिव्यंजक बनाता है। व्यंग्यकारों ने संस्कृत के शब्दों को व्यंग्य निबंध का आधार नहीं बनाया है, किन्तु व्यंग्य को संप्रेषित करने के लिए सामान्य बोलचाल की हिन्दी में इसका प्रयोग किया हैं।

विदेशी शब्दों का चयन

हिन्दी के व्यंग्य निबंधों में विदेशी भाषा जैसे - अंग्रेजी, उर्दू-फारसी-अरबी के शब्दों का प्रयोग भी यथावसर किया गया है। व्यंग्यकार इन शब्दों का प्रयोग पाण्डित्य प्रदर्शन के लिए नहीं, किन्तु व्यंग्य के मुख्य उद्देश्य को प्रकाशित

करने के लिए करता है। कुछ उदाहरण दृष्टव्य हैं -

अंग्रेजी शब्द

"मैं आपसे 'हार्ट टु हार्ट टाक' करना चाहता हूँ।" "उसके 'इयर्स' को किसी ने 'पायजन' कर दिया है।" और "तुम्हारे 'फाधर' ने मेरे 'अंकिल' से एक 'वण्डरफुल' बात कही।"

..... पानी 'वाटर' लाओ 'ब्रिंग'।

'फार लिए, महाराज 'किंग'।।[25]

यहाँ पर किस तरह लोग दूसरों के सामने अपने अंग्रेजी भाषा के ज्ञान को प्रदर्शित करते है। इसको व्यंजित किया गया है।

"छायावादी, प्रगतिवादी, प्रयोगवादी कवि होते थे, इधर एक नयी इमर्जेन्सी काव्यधारा बही है और बहुत से इमर्जेन्सी कवि हो गये हैं।"[26]

"मंच पर मैले कपड़े पहने ग़रीब-सा दुबला पतला व्यक्ति आता है। जादूगर उसे टेबूल पर लिटा देता है और आदर्शवादी भाषणों से हिप्नोटाइज कर देता है। यंत्र चालू होता है। अस्त्र पेट पर है, पेट कटने लगता है, कट जाता है।"[27]

सरकार निरन्तर अपने भाषणों के द्वारा गरीब जनता को बहलाती रहती है। इस पर 'हिप्नोटाइज' शब्द द्वारा व्यंग्य किया गया है।

"विष्णु ने संसार का पालन करने का बीड़ा उठाया और अन्त में चलकर शिव ने पुराने रैकॉड खत्म करने की जिम्मेदारी सँभाली। ..... ब्रह्मणों की बात ही क्या-स्वयं भगवान राम, उनके चरणचिह्नों को बतौर 'आइडिण्टीफिकेशन मार्क' की भाँती अपने हृदय में धारण करते थे।"[28]

"आजकल चीनी के वारे-न्यारे हैं। स्वयं तो अडरग्राउंड हो रही है परंतु उसके रेट सातवें आसमान को छू रहे हैं।"[29]

यहाँ रेखांकित किये अंग्रेजी शब्दों के द्वारा जमाखोरी तथा मँहगाई जैसी विसंगतियों पर व्यंग्य किया है।

"सिंग साहब बड़े ओहदे पर हैं। जो लोग बड़े होते हैं उनको हाज़मे की शिकायत होती है। वे सँभलकर खाते हैं। कभी ओवर ईटिंग हो जाती है तो उनका यह पेट गुड़गुड़ाने लगता है। हिन्दुस्तानियों का यह पापी पेट बड़ा डेंजरस होता है।"[30]

यहाँ 'ओवर ईटिंग' शब्द द्वारा अधिक रिश्वत लेने के वृत्ति पर व्यंग्य किया

गया है।

"गुप्तजी बड़े बातूनी हैं। उनकी ज़ुबान अच्छा माईलेज देती है।"[31]

"तुम्हारा चहेरा रिजेक्टेड थीसिस के समान कांतिहीन क्यों है?"[32]

"हां भगवान, यह सही है। पर आप घबराइए मत। आप मुझे हार्ड कैश दे ही रहे हैं। मैं इस पैसें से हैंडबिल छपवाकर आपके नाम पर बंटवा दूंगा और पब्लिसिटी को पब्लिसिटी से मिटाकर आपको रिहेबलिटेड करवा दूंगा।"[33]

"आप को मेरे प्रेम विवाह के बारे में सन्देह क्यों है? शायद इसलिए कि प्रेम जैसी लकज़री मैं अफोर्ड नहीं कर सकता था? और मेरा चहेरा-मोहरा भी.....

'नहीं नहीं, इेसी बात नहीं, वे बोले "आप जैसे जेंटिलमैन और प्रेमविवाह करें।"[34]

"उनके घर के आसपास कुत्तों का टुर्नामेन्ट चल रहा था। रेत का ढ़ेर उन कुत्तों के लिए बेडरूम का काम दे रहा था।"[35]

"पत्रकार-माफिया 'ब्लेकमेल' करने का विशेषज्ञ होता है।"[36]

यहाँ पत्रकार के चारित्रिक गुण को व्यंजित किया गया है।

"सुनिए! क्या आपने बुद्धिजीवी देखा है?

मैंने देखा है..... नहीं देखे हैं।

आप कहेंगे गप्प; एक साथ, एक जगह पर एक से ज्यादा की संख्या में ये जीव सरवाइव कर ही नहीं सकते (जिस तरह एक म्यान में दो तलवारें)।"[37]

"बचपन से लेकर आज तक सारा केरेक्टर कोरे कागज जैसा कोरा ही रह गया। कोई ऐसा मोका हाथ न लगा कि जरा सा केरेक्टर बिगाड़ लें।"[38]

"सिर जो पहले चरागाह था बाद में क्रिकेट पिच हो गया। आँखों की वोल्टेज थ्री फेज से टू फेज हो गई।"[39]

यहाँ सिर का 'क्रिकेट पिच' होने का मतलब है कि सिर पर से बाल झर गये है तथा आँखों की 'वोल्टेज थ्री फेज से टू फेज' होने का मतलब है कि नज़र कमजोर हो गई है।

"किसीने कहा, मेरे ग्रेंड फादर आज भी सौ एकड़ जमीन जोतते हैं, किसीने कहा की क्या बताएं साहब, पहले हम भी 'लैंडलार्ड' थे लेकिन 'लैंड' दूसरे प्रॉविन्स में रह गयी और 'लोर्ड' इधर बच्चों को पढ़ाने का काम कर रहे हैं।"[40]

"अखवार अपने ड्राईंग रूम का सबसे सस्ता और अच्छा 'रिसेपसनिस्ट' है।"[41]

"कई बार तो लोगों को यह भ्रम होता कि बबुआ राजा के पास शायद कलादीन अथवा अलादीन का कोई चिराग है। इस चिराग से वह दिन में तारे चमका सकते हैं, हथेली पर सरसों जमा सकते हैं। इस्पात पर फूल खिला सकते है और फूल खिला कर जनता को 'डेमफूल' तक बना सकते हैं।"[42]

यहाँ बबुआ राजा जैसी सरकार कैसे बेरोजगारों को नित्य नए-नए रोजगारी के स्वप्न दिखाकर मुर्ख बनाती है। इस स्थिति पर व्यंग्य किया गया है।

"लोगो को छुट्टियों का बहाना बनाने के लिए एक माध्यम और मिल जाता। दुम को भी हेडेक, सर्दी, जुकाम, नजला वगैरा होने लगता। प्रमोशन पोलिसी भी ज्यादा आसान हो जाती। जो कार्मिक लगातार तीन वर्षों तक बिना काम किये सिर्फ दुम, हिलाता रहता, उसका प्रमोशन ड्यू हो जाता।"[43]

यहाँ ऑफिस में कामचोर तथा जीहजूरी करनेवाले लोगों पर व्यंग्य किया गया है जो किसी न किसी तरह दफ्तर का काम न करके छूट्टी पर उतर जाते है तथा ऐसे ही लोगों को प्रमोशन भी आसानी से मिल जाता है।

"ये टेक्स वाले शरीफ व्यक्तियों पर शक करने पड़ते हैं। एक कवि ने स्पष्ट लिख दिया है कि बड़ों तथा स्त्रियों पर लोक सन्देह करते हैं। हाथ में माला? अजी, माल का स्त्रीलिंग जो ठहरा। मैं बैंक बैंलेस पर जीता हूँ, आकसीजन पर नहीं। में बड़ा आदमी हूँ!"[44]

"२६ जनवरी और १५ अगस्त ये दो ऐसे राष्ट्रीय त्यौहार हैं जिस दिन सभी छुट्टी मनाते हैं। जो छोटे बच्चे, सरकारी अधिकारी या मास्टर नहीं हैं, वे इस दिन को पूरी तरह 'इंज्वाय' करते हैं।"[45]

२६ जनवरी तथा १५ अगस्ट हमारी स्वतंत्रता तथा शहिदों को याद करने का दिवस है, किन्तु समाज में इतना खोखलापन आ गया है कि वह इन दिनों को सरकारी छूट्टी समझकर 'इंज्वाय' अर्थात आनंद करते हैं।

"तू इसकी फिक्र मत कर। अगर सरकार बदल भी जाएगी तो मेरी पोजीशन में फर्क नहीं आने वाला। सरकारें गिराने वाला भी मैं हूँ और बनाने वाला भी।"[46]

'पोजीशन' शब्द यहाँ राजनैतिक विसंगति को व्यंजित करता है।

ऊपर्युक्त रेखांकित अंग्रेजी शब्दों के द्वारा व्यंग्यकारों ने विविध प्रकार की विसंगतियों पर व्यंग्य प्रहार किया है।

व्यंग्य निबंध में प्रयुक्त कुछ अंग्रेजी शब्द :

'कम्पलसरी', 'सर्जरी', 'रिटायमेंट', 'इशू', 'पार्टनर', 'हूटिंग', 'स्केंडल्ड',

'गेट कीपर', 'डिमाण्ड', 'क्विंटल', 'प्रापर्टी', 'आइडेण्टिटी', 'फैशन', (हरिशंकर परसाई); 'ब्रोडकास्ट', 'ट्रेजडी', 'वेजीटेरियन', 'हेलिकोप्टर', 'मनीप्लान्ट', 'सरकुलेशन', 'एकेडेमिक', 'फाइल', 'क्वार्टर', 'डिस्टर्ब', 'अरजेन्ट', (शरद जोशी); 'रेजीडेंसी', 'साइज', 'सस्पेन्स', 'ऐक्शन', 'इंजीनियर', 'एक्सपेरिमेण्टलिस्ट', 'पोट्रेट', 'लैण्डस्केप', (रवीन्द्रनाथ त्यागी); 'इन्कमटैक्स', 'बोर्ड', 'रेल्वे', 'लांड्री', 'कंडकटर', 'लोन', 'इंटरकाम', 'डोग-लवर', 'काऊंटर', 'एक्ज़िस्टेंशिएलिज़्म', 'वंडरफूल', (श्रीलाल शुक्ल); 'मेकेनिक', 'बैंड मास्टर', 'लाइन', 'एन.ओ.सी.', 'रजिस्टर्ड', 'जैकपोट', 'सीनियर', 'कैरियर', 'मेरीट', 'सेफटी', 'कंपलसरी रिटायरमेंट', 'एकमोडेट', (लतीफ घोंघी); 'रिजर्व', 'ट्रैफिक', 'कम्पीटीशन', 'लार्जस्केल', 'चैलेंज', 'राइटिस्ट', 'लैफ्टिस्ट', 'अटेंशन', (संसारचंन्द्र); 'पेटीकोट गवर्नमेन्ट', 'डिमोक्रेसी', 'सिसटैक्स', 'आबजर्वेशन', 'इनीशियलस', 'एकनालेजमेण्ट कार्ड', (डॉ. आत्मानंद मिश्र); 'वाइफ', 'एक्सपर्ट', 'कौंग्रेचुलेशन', 'लेटर', 'इनीमिया', 'हायेस्ट', 'कंफोर्टेबल', 'फिटींग', 'आर्थोडाक्स', 'थिकिंग', 'कापीराइट', 'डिसिप्लिन', 'कंविन्स', 'इंपोर्टेड', (नरेन्द्र कोहली); 'कैशियर', 'रिकोडिंग', 'बुक', 'रिहर्सल', 'मेसेंजर', 'कोरस', 'मेलोड्डी', 'इको चैनेल', (केशवचन्द्र वर्मा); 'मैनुअल', 'डेंजरसली', 'लिव', 'कानिस्टिबिल', 'डोग शो', 'आफटर शेव', 'इंटिमेट', 'इंडियन रोपट्रिक', (अमृतराय); 'प्रमोशन', 'सेनेटोरियम', 'प्रेस-रिव्यू', 'फेवर', 'चार्जशीट', 'होमटाऊन', 'टेरीटरी', 'टेंपरेरी', 'सर्कुलेशन', 'कनफर्मड', 'डिवीजनल', 'अलाटमेंट', (अजात शत्रु); 'सेक्रेटेरिएट', 'बोक्स', 'पार्टिसिपेट', 'एडवांस', 'ओफिस', 'कोम्प्लेक्स', 'अनयूज़वल', 'फिलोसफी', (शंकर पुणताम्बेकर); 'डिस्पैच', 'टूर्नामेन्ट', 'बेडरूम', 'कल्चर्ड', 'टैंपरेरी', 'लीड', 'बेल्ट', 'प्रमोशन', 'आइडिया', 'साउण्ड', 'बोक्स', (सुदर्शन मजीठिया); 'लैंग्वेज', 'रिमांड', 'लेक्चर', 'ड्राफ्ट', 'ब्लडप्रेसर', (प्रेम जनमेजय); 'स्टैप्टोमाइसीन', 'सिवील सर्जन', 'इलैक्ट्रीशियन', 'जैण्टलमैन', 'टैण्डर', 'एनलार्ज', 'इडियोमेटिक', 'इण्टरनेशनल', 'ब्यूटीफूल', 'प्रोस्पेक्टस', (रोशनलाल सुरीरवाला); 'वेराइटी', 'शेड्स', 'रिपेयर', 'साइक्लोस्ताइल', 'ब्रीफकेश', 'फिफ्टी', 'क्रेडिट', 'इस्टेब्लिशमेंन्ट', (बरसानेलाल चतुर्वेदी); 'फिक्स', 'मेनू', 'कैपसूल', 'टेबलेट', 'ड्रोपर', 'सुपर फास्ट', 'स्टाइल', (बालेन्दु शेखर तिवारी); 'बुलेट-प्रूफ', 'बोडी-गार्ड', 'एडमीशन', 'स्कूप', 'मैटर', 'सस्पेंशन', 'प्रमोशन', 'म्युचुअल सरवाइव', (सूर्यबाला); 'कापीराइट', 'माइक्रोफोन', 'एनाउन्स', 'सैटिल', 'पालिटिक्स', (के.पी.सक्सेना); 'हेड', 'राइम', 'होमवर्क',

'मैडम', 'इनविटेशन', 'स्पीडोमीटर', 'ट्रांसिस्टर', 'टेपरिकार्डर', 'ऑपरेशन', (मधुसूदन पाटिल); 'फोल्डिंग', 'स्क्रीन', 'परसनाल्टी', 'फादर', 'इंजेक्शन', 'डयुटी', 'आडीटोरियम', (विश्वभावन देवलिया); 'फोर्मेलिटी', 'एडिशनल', 'फर्नीचर', 'ग्रांट', 'एस्टीमेंट', 'लेप्स', 'प्रिवियर्स', 'कॉण्ट्रैक्ट', 'अण्डरगाउंड', (रामनारायण उपाध्याय); 'ग्लैन्ड', 'स्टैन', 'एग्रीमेंट', 'बिहेव', 'ऐन्टीथीसिस', 'फेशन', 'क्वालीफिकेशन्स', (श्यामसुन्दर घोष); 'अर्लाट', 'ट्रैक', 'कम्यूनिस्ट', 'प्रोजेक्ट', 'डिपार्टमेन्ट', 'सोफेस्टिकेटेड', (ज्ञान चतुर्वेदी); 'इंजन', 'ब्लोक', 'स्पार्क', 'प्लग', 'कारब्यूरेटर', 'अलार्म', 'सेंटीमीटर', 'ट्रेन', (हरि जोशी), 'स्मगलिंग', 'रिकार्ड्स', 'ब्लड-डोनेशन', 'हाईकमांड', 'हिल्स', 'क्लाइमेंट', 'बर्ड वाचिंग', (श्रवणकुमार उर्मलिया); 'ग्रीट', 'कैलेंडर', 'रिजर्वेशन', 'वोटर', 'कमीशन', 'फ्रेश-मूड', 'स्मार्टनैस', 'सर्किट', (उमाशंकर चतुर्वेदी); 'वैरायटी', 'हिपो क्रैसी', 'प्रमोशन', 'इमेज', 'डायगनोसिस', 'एनजाइमा', 'टोनिक', 'लीवर', 'डेप्रिसियेशन', 'सिरियसली', 'सेटायरिस्ट', (जगतसिंह बिष्ट); 'डिटरजेंट', 'कोलेस्ट्राल', 'कैजुअल लीव', 'एक्सपर्ट', 'ओपिनियन', 'अपोइन्टमेन्ट', 'असैम्बल', 'कमेटी', 'फेवर', 'फाइल कवर', (अलका पाठक); आदि इसी प्रकार के शब्द प्रयोग हैं।

अंग्रेजी वाक्यों का प्रयोग

'छुट्टी' पर व्यंग्य करते हुए त्यागी लिखते हैं कि - "छुट्टी एक ऐसी जरूरी चीज़ है कि भगवान तक को सृष्टि बनाने के बाद उसे लेना पड़ा और मगर इन दोस्तों, रिश्तेदारों और मोहल्ले के लोगों को क्या कहिए जो कि जान-बूझकर बड़ी मासूमित के साथ आपका इतवार खराब करते हैं। बर्नाड शो ने शायद इसी कारण कहा था कि 'अन्तहीन छुट्टी का नाम नरक है।' हैल इज नथिंग बट ए परपीचुअल होली डे।"[47]

"युवक भूलाभाई देसाई का मज़ाक उड़ाने के लिए अंग्रेज जज ने कहा - "मिस्टर देसाई, यू आर ए चाइल्ड इन ला।" भूलाभाई ने तपाक से उत्तर दिया - "यस माई लार्ड, यू आर ए फादर इन ला।" जज ने उन्हें कानून में बच्चा बताया, तो देसाई ने उसे कानून में पिता तुल्य और श्लेष में श्वसुर ठहराया।"[48]

मरीज के मर जाने के पश्चात, डोॅक्टर्स की अफसोस व्यक्त करने के तरिके पर व्यंग्य करते हुए नरेन्द्र कोहली कहते हैं - "मैं सोचता हूँ कि मैं यदि डॉक्टर होता तो इतना निराशावादी कभी नहीं होता, आकर अपनी असफलता की सूचना

देने की क्या तुक – "वी कूड नोट सेव हिम।" नान सेन्स, – मैं डोक्टर होता तो हँसकर कहता, "वी हैव हैल्प्ड हिम टु डाई।"[49]

"हाल ही में चतुर्थ बाल-महोत्सव में आये एक ब्रिटिश प्रतिनिधि से भोजन के समय चम्मच की आवश्यकता पर पूछा गया तो वे बोले "आई डोण्ट नीड इट, दिस इज़ फार इण्डियन पोलीटीशियस।"[50]

ऊपर्युक्त अंग्रेजी वाक्य के द्वारा हमारे यहाँ की राजनीति में व्याप्त चमचागीरी को व्यंजित किया गया हैं।

"इस साल निखिल का प्रमोशन सम्भवित है। सब कुछ बोस द्वारा लिखी गई रिपोर्ट पर निर्भर करता है। निखिल पैंतालिश अंश के कोण पर झुक कर कह रहा है, "गुड ईवनिंग सर। गुड ईवनिंग मैडम! बेठिये सर! बैठिएगा मैडम!! वी आर रियली ग्रेटफुल कि आपने हमारे लिए वक्त निकाला। मैडम, आप अपने साथ कार में 'जिमी' को भी ले आतीं तो बड़ा मज़ा आता। जब भी मैं आप के घर जाता हूँ, वह मुझे देखकर बड़े प्यार से भौंकता है। मुझे पहचानने लागा हैं अब तो। 'जिमी' इज़ रियली वैरी स्वीट।"[51]

यहाँ प्रमोशन के लिए अपने बोस तथा उसके कुत्तें की भी जीहजूरी करनेवालें लोगों के व्यवहार पर व्यंग्य किया गया है।

व्यंग्य निबंध में वक्रता तथा पैनापन लाने के लिए तथाकथित अंग्रेजी शब्दों तथा वाक्यों का चयन बड़ी कुशलता के साथ किया है। व्यंग्यकारों ने अनेक अंग्रेजी शब्दों का हिन्दीकरण भी किया है। हिन्दी के विभक्ति, वचन, लिंग आदि के अनुसार इसका प्रयोग किया है। जैसे –

'नम्बरी', 'एजेन्सियाँ', 'वाशिंग्टनी', (हरिशंकर परसाई); 'लेडीज़ों', 'बैंकों', 'अलसेशियनों', 'आइडियाएँ', 'पैसेन्जरों', 'मोटरें' [52], 'सिगरेटदानियाँ', 'टेबुल', 'कमिश्नरी', 'फोर्मदान' [53], 'लाउडस्पीकरों', 'प्रोफेसरों', 'युनिवर्सिटियों', 'पुलिस इन्स्पेक्टरी', 'पोस्टरी', 'पैंफ़्लेटी', 'टयूशनों', 'डोक्टरों', 'क्रिकेटियर' [54], 'दफ्तरों', 'डिपार्टमेंटल स्टोरों', 'होटलों', 'क्लबों', 'थियेटरों', 'फाइलों' [55], 'प्लेटें', 'शेयर फार्मों' [56], 'नम्बरों', 'मेम्बरों', 'मोटरें', 'चार्टों', 'पोस्टरों', 'रिपोर्टों' [57], 'डोक्टरनी', 'इंजीनियरनी', 'प्रोफेसरनी', 'डोक्टरों', 'डिलरों' [58], 'विकेटों', 'बोडी-गार्ड़ों', 'कंट्रोवर्सियों', 'लीडरी', 'कैंडीडेटों', 'वोटरों', 'डिग्रीयाँ', 'स्पेशलिस्टों' [59], 'टयूबलाइटें', 'पार्टियों', 'कैसेटों' [60], 'रिबनों', 'शयर होल्डरों', 'युनिवर्सिटियों', 'कैसेटों' [61], 'दर्जनों', 'होटलों', 'रिजर्वेशनों', 'कम्पनियों', 'कारपोरेसनों',

'साइनबोर्डों', 'फाइलों' [62] आदि।

अरबी-फारसी-उर्दू शब्दों का चयन

अंग्रेजी शब्दों के अलावा हिन्दी व्यंग्य निबंध में अरबी-फारसी तथा उर्दू भाषा के शब्दों का प्रयोग भी मिलता है। ये शब्द हिन्दी भाषा में अच्छी तरह घूल मिल गए है। व्यंग्य को सम्प्रेषित करने के लिए कई व्यंग्यकारों ने इन शब्दों का यथास्थान प्रयोग किया है। इसके कुछ उदाहरण यहाँ दृष्टव्य है।

"बस की हर सीट की पीठ पर बम होने की संभावना लिखी होगी, लेकिन सवारियां हैं कि बारूद के ढ़ेर पर ही खुशी-खुशी बैठने को तैयार होगी। कहीं तिल रखने की जगह नहीं है लेकिन ताड़ जैसा कंडकटर अपनी तशरीफ को एडजस्ट करने की कोशिश करेगा।"[63]

'बारूद' शब्द बस में अधिक भीड़ को सूचित करता है तथा 'तशरीफ' शब्द द्वारा कंडकटर की अधिक सवारियाँ लेने तथा उनको किसी भी प्रकार जगह देने की वृत्ति पर व्यंग्य किया गया है।

"आप ने खुद ही सुना होगा कि आर.डी. ने रेढ़ मार के रख दी 'शोले' की। भला "महबूबा महबूबा' कीं चीख-पुकार कोई धुन है! लगता है जैसे कोई नामुराद बीबी शौहर की मिजाजपुर्सी कर रही हो और वह चीख रहा है।"[64]

यहाँ पति-पत्नी के संबंध को व्यंग्यात्मक रूप में चित्रित किया गया है।

"उसने (संगीत ने) काफी गहरा दफ़नाने की सिफारिश की थी मगर सार्वजनिक निर्माण भवन शायद उस दिनों भी उतना ही मुस्तैद था जितना कि आज है।"[65]

'मुस्तैद' शब्द द्वारा भ्रष्ट कर्मचारियों पर व्यंग्य किया गया है।

"..... हम सबको सख्त हिदायत कर दी गई थी कि नये सोफे पर कोई बैठने न पाये - कवर गंदा हो जायेगा, स्प्रिंग ढीले हो जायेंगे, तथा पोलिश की चमक जाती रहेगी।"[66]

घर के बड़े व्यक्ति नई चीज को गंदी हो जाने के डर से बच्चों को न छूने की 'हिदायत' अर्थात सूचना अनेकबार देते रहते है। इस मानवीय मनोवृत्ति को यहाँ व्यंजित किया गया है।

"शीघ्रता एक मुफीद चीज़ है पर यह नुस्खा सर्वमान्य हो बात ऐसी भी नहीं। सब एक राय हों तो फिर जनतंत्र का सुलक्षण भी नहीं। कुछ बुद्धिमानों का

फतवा है कि धीमा और सावधान, दौड़ जीतता है। जल्दबाजी न हो तो गलतियों का इमकान कर रहता है। शायद इसीलिये हमारे प्रकाशकों ने मिश्रित व्यवस्था सरीखा बीच का रास्ता निकाला है। वे धीमी रफ्तार के हामी हैं। आश्वासन देने में शीध्रता बरतते हैं पर अमल में अप्पू चाल के कायल है।"[67]

यहाँ प्रशासन तथा प्रशासकों की व्यावहारिक क्रियाओं पर व्यंग्य किया गया हैं।

"साहिब के पूजा करने की बात भले ही सफेद झूठ क्यों न हो, वे फिर भी बँगले के अन्दर घुसने की हिम्मत नहीं करेंगें। खुदा न करे अगर साहिब वाक़ई खुदा की इबादत में मसरूफ हुए तो इस बे-अदबी के लिए उन्हें हरगिज़ मुआफ नहीं किया जाएगा। ये खास मन्त्री वाक़ई पूजा करते हैं या बगुले की तरह सिर्फ आँखें ही बन्द किए बैठे रहते हैं। ?"[68]

मंत्री को जनता से न मिलना हो, तो वह अपने नौकर से तरह-तरह के बहाने कहलवाता है। जैसे - "साहिब पूजा कर रहे हैं।" इस बात को यहाँ व्यंग्यकार ने व्यंग्यात्मक रूप से प्रस्तुत किया है।

"सरकार को ठगना सबसे आसान है। नाबालिग है। मैंने नये बने हुए मकान मालिक से पूछा - कितना किराय है एक खण्ड का? उसने कहा - ये तो सरकार के लिए बनाए हैं। तुम लोग ज्यादा से ज्यादा 125 रूपया दोगे। सरकार हर खण्ड 250 दे रही है।"[69]

'नाबालिग' शब्द प्रयोग द्वारा सरकारी कामकाज में हो रही धांधलेबाजी तथा धन के अपव्यय पर व्यंग्य किया है।

व्यंग्य निबंधों में अरबी-फारसी-उर्दू के शब्दों का प्रयोग अनेक स्थानों पर किया गया है। कुछ अरबी-फारसी-उर्दू शब्द इस प्रकार हैं :

'कफन', 'सलीब', 'लाहौल विला फूवत', 'नशा', 'तूफान', 'जवाब', 'कम्बख्त', 'वाकई', 'गजल', 'तस्वीर', 'सिफत', (हरिशंकर परसाई); 'फजीहत', 'तफतीश', 'इन्तजाम', 'शक', 'काफूर', 'खुन्नस', 'ताज्जूब', 'नगद', 'कबूल', 'शौक', 'इनायत', (शरद जोशी); 'आरामतलब', 'हराम', 'पुश्तैनी', 'दीगर', 'शगल', 'इश्कगाह', (रवीन्द्रनाथ त्यागी); 'लफ्ज', 'जहाँपनाह', 'करिश्मा', 'दरख्वास्त', 'अय्यासी', 'मुस्तकिल', 'इश्तहार', 'नाबदानी', 'मुअत्तिल', 'लाजिमी', 'गुसलखाना', 'इफरात', 'फिर्जाँ', (श्रीलाल शुक्ल); 'बेमूरब्बत', 'हसरत', 'शबाब', 'तौफीक', 'बेंतरतीब', 'खौफनाक', 'मयस्सर', 'जश्न', 'तसुव्वर', 'गवारा', (संसारचन्द्र);

'काफूर', 'हिदायतें', 'मुजस्सिम', 'मुम्तहनी', 'तौहीन', 'पर्दानशीन', 'मुकम्मिल', (आत्मानन्द मिश्र); 'जनाजा', 'हयात', 'खुदा', 'कब्रिस्तान', 'हलफनामा', 'फातिहा', 'फरिश्ता', 'परवरदिगार', 'जिस्म', 'हुस्न', 'फातिहा', (लतीफ घोंघी); 'शराफत', 'शुक्र', 'बदमाश', 'इश्क', 'गलतफहमी', 'खाहमखाह', 'बरखुरदार', 'मुहरम्मी', (नरेन्द्र कोहली); 'खुराफात', 'जायजा', 'जुलूस', (केशवचन्द्र वर्मा); 'मुहाल', 'लिहाजा', 'फिजूल', 'ताज्जुब', 'बेतहाशा', 'शकरकंद' (अमृतराय); 'मुआयना', 'सजायाफता', 'मुहताज', 'फिजूल', 'मशक्कत', 'वाकिफ', 'शुक्रगुजार', (शंकर पुणताम्बेकर); 'निगाह', 'अश्क', 'यकीन', 'पाबंद', (प्रेम जनमेजय); 'दिमाग', 'गुसलखाना', 'हिमायती', 'तनख्वाह', 'जहन्नुम', 'बेतकल्लुफ', 'शुक्रगुजार', 'बाकायदा', (रोशनलाल सुरीरवाला); 'तकाजा', 'माशूक', 'पुश्तें', 'महफिल', (बरसानेलाल चतुर्वेदी); 'रिश्वत', 'बयान', 'तलाक', (बालेन्दु शेखर तिवारी); 'शुबहा', 'महकमें', 'तकदीर', 'लुत्फ', 'मुअत्तली', 'तकाजा', 'नाकाफी', 'नामाकूल', 'अहसानफरोश', 'जुमला' (सूर्यबाला); 'शहीद-ए-मौसीकी', 'एहतियात', 'खौफ', 'बदहजमी', 'मुलाजिम', 'शेरवानी', 'मुकद्दर', 'हैरत', 'सेहरा' (के. पी. सक्सेना); 'तकरार', 'जहाज', 'शुक्र', 'तशरीफ', 'फरमाइश', 'ईजाद' (मधुसूदन पाटिल); 'रस्म-अदाई', 'दकियानूस', 'मुखातिब', 'मशक्कत', (रामनारायण उपाध्याय); 'शुक्रगुजार', 'शादीशुदा', 'हश्र', 'उमरदराज', 'ताज्जुब', 'तुर्रा', 'नौबत', 'गुसलखाना', 'पाखाना' (श्यामसुन्दर घोष); 'नुस्खा', 'मुमकिन', 'अफसरान', 'तशरीफ', 'सुकून', 'गलतफहमी', 'हरफनमौला', 'इजाफा', (शेरजंग गर्ग); 'तकियाकलाम', 'बाअदब', (विश्वेन्द्र महेता); 'वायदा', 'जायज', 'अख्तियार', 'मुब्तिला', 'सरंजाम', (श्रवणकुमार उर्मलिया); 'इस्तीफा', 'रूह', 'बेतहाशा', 'नेस्तनाबूद', 'माशूका', 'मौका-ए-वारदात', 'खुराफाती', (उमाशंकर चतुर्वेदी); 'खौफनाक', 'सकुन', 'पैरवी', 'इजाद', 'नक्काशी', (अमरेन्द्र कुमार); 'सुरूर', 'नासाज़', 'तहजीब', 'नावाकिफ', 'दस्तक', 'हकीम', 'शुक्रगुजार', (जगतसिंह विष्ट); 'हुकमअद्ली', 'मुख्तलिफ', 'परवरदिगार', (भगतराम भट्ट) आदि शब्दों के प्रयोग मिलते हैं।

अरबी, फारसी, उर्दु के शब्दों का हिंन्दीकरण भी व्यंग्यकारों ने किया है। इसका प्रयोग प्रायः हिन्दी व्यंग्य निबंधों में कम हुआ है।

ग्राम्य शब्दों का चयन

जिन शब्दों का प्रयोग हम साहित्यिक भाषा में न करते हुए बोलचाल की

सामान्य भाषा अथवा देहाती भाषा में करते है उन्हें ग्राम्य शब्द कहा जाता है। व्यंग्यकार कभी कभी व्यंग्य को तीव्र और प्रहारात्मक बनाने के लिए अपनी व्यंग्यभाषा में ग्राम्य शब्दों को भी सम्प्रेषित करता है। कुछ उदाहरण देखिए -

"राजनीति के मर्दों ने वेश्यालयों को मात कर दिया। किसी-किसी ने तो घंटे में तीन-तीन खसम बदल डाले।"[70]

घंटे में तीन-तीन खसम बदल ने से तात्पर्य है कि नेता ने घंटे में तीन पार्टियाँ बदल डाली। यहाँ राजनैतिक विसंगति को व्यंजित किया गया है।

"ठाठ हो गये ससुरी आजादी मिलने के बाद।"[71]

आजादी मिलने के पश्चात भी देश में भ्रष्टाचार अधिक से अधिक फैलता ही जा रहा है। यही रोष को व्यंग्यकार ने यहाँ पस्तुत किया है।

"कोइ साल दो-चार ऐटमबम भी नहीं गिरा देता कि सब एक बारगी भसम हो जाय, छुट्टी मिले इस रोज की हाय हाय से।"[72]

यहाँ भारत की अधिक बस्ती को व्यंजित किया गया है।

"पाँयलागी, हम पैंचे बजर दिहाती, पढ़े न लिखे, को पढ़ावै हमका, हमार बाप, दादा, परदादा, लंकड़दादा सात पीढ़ी में कोऊ पढ़ा होय तब तो, सब करिया अच्छर भैंस बराबर, तौन हूमहूँ बुड़बक रह गये, बौल-बतियावै का सहूर भी हमरे नाहीं, जौन भूल-चूक, होय आप माफ कै देइहैं।"[73]

यहाँ पर ग्राम्य शब्दों द्वारा देहाती की चारित्रिक विशेषता को प्रस्तुत किया है।

"जमाने को माहौल ही बिगरी गयो है। सेवा की जगह मेवा ने ले लीनी है। कुर्सी बची रहे और बैंक बैलेंस बढ़तो रहे, ये ही काम करबे कूँ रहि गए हैं। भगवान ही पार लगावेगो।"[74]

नेता की दलबदल की वृत्ति तथा कुर्सी पर बैठते ही पैसे कमाने की चाहत को यहाँ ग्राम्य शब्दों द्वारा प्रस्तुत किया है।

"सो - दो सौ काम तो मैं गिनाइ दऊँ जो बड़े बड़े पदन पर डटे भये हैं और जिनके शोध प्रबन्धन कूँ या तो किराये पर लिखायो गयो का उनको चमचों ने लिखी है। डाक्टरेट मिलने के उपलक्ष्य में एक प्रोफेसर वर्मा को अभिनन्दन भया।"[75]

पैसे दैकर शोध-प्रबन्ध लिखने तथा लिखवानेवालों पर व्यंग्य किया गया है।

"मैं सब ताड़ गई हूँ।..... कालोनी की मुझे कोई चिन्ता नहीं हौगी!.....

सब निगोड़ी करमजली मेरे से उन्नीस ही हैं!..... अपने-अपने बच्चों के पोतड़ों में पतली हुई जा रही हौगी!..... मामला कुछ दूर का दीखे हैगा!....."[76]

..... किरपा करके रऊरा सभे बैठ जायीं। हमरा के पकावै के विधि वूझे का बा, आप खावै का विधि बतावे लगलीं। हमरा बनारस में जौन गोरिया गुझिया पकावै ली, ओनकर नाक के लोंग और माथे के बिंदिया दमदम दमकेला।"[77]

समाचार पत्र में लग्न(विवाह) विषयक विज्ञाप्रन पर व्यंग्य करते हुए संसारचन्द्र लिखते हैं - "यहां आपको रंडवे भी मिलेंगे जो किसी बालविधवा की टाह में हैं। आपको ऐसी विधवा का पता भी मिल जाएगा जो किसी रंडवे का घर बसाना चाहती है।"[78]

"डंडाधारी पहलवान सेठों की गटियों पर डंडा अडा कर धमकाते हैं, "ओय सेठवा, महिना तो हम तुम्हारे से असूल करबै करब, समझ कि नाहीं? ससुर के नाती, गरीबन का खून चूस-चूस के बहुत माल बनावत हो!"[79]

"विष्णुजी ने मन ही मन सोचा और बुदबुदाये! बुढऊ, तू दूर की ही बना ले! कम से कम स्वर्ग से तेरे जैसी बला दो-चार महीनों के लिए दूर तो रहेगी! बूढ़ा खूसट या तो दिन भर अपना तानपुरा बजाता रहता है या इधर की उधर गाता रहता है। सबकी नाक में दम कर रखा है।"[80]

यहाँ विष्णुजी की नारद के प्रति नाराजगी को व्यक्त किया गया है।

उपर्युक्त उदाहरणों में कहीं-कहीं स्थान पर ग्राम्य शब्दों द्वारा व्यंग्य को सम्प्रेषित किया गया है। किन्तु कई उदाहरण ऐसे भी है जिनमें ग्राम्य शब्दों का प्रयोग सामान्य बोलचाल तथा किसी बात को प्रस्तुत करने के लिए किया गया है।

व्यंग्य निबंधों में निहित कुछ अन्य ग्राम्य शब्द :

'बाप', 'कवांरा', 'रंडुआ', 'बुढ़ऊ', 'खसम', 'टुच्चे', 'कुलय', 'बक्काल', 'बुढ़ा खूसट', 'निठल्ल', 'अड़ंगा', (हरिशंकर परसाई); 'दंगल', 'मुस्तंड़े', 'चाटना', 'सुसरी', 'थोबड़ा', (बंगाली भाषा के उच्चारण - होयंगा, हाम, तोशरीफ, कोमीज) 'लछमी', (शरद जोशी); 'सुरतिया', 'संगहिना', 'भुईया', 'मेहरिया', (रवीन्द्रनाथ त्यागी); 'मार्फत', 'गँजेडी-भँगेडी', (श्रीलाल शुक्ल); 'टोटका', 'भड़ास', (नरेन्द्र कोहली); 'हिरना', 'बुढ़िया', 'कपार', 'दुलहिन', 'सुरूज', 'रूपैया', 'एही', 'छोकरे', 'मुलुक', (अमृत राय); 'छोरी', 'हेकड़ी', 'अँगोछा', 'ड्योढी', 'डकार', 'अँगोछा', 'झापड', 'हण्डे', 'लबालब', 'धौंस', 'ढाढस', 'सौत', 'चौथड़', 'बेछना', 'पौरी', (रोशनलाल सुरीरवाला); 'ढोलक', 'बाप', 'ठरे', 'बुजुर्गवार', 'किरपा', 'निगोड़ी',

'पकावै', (के. पी. सक्सेना); 'घपला', 'बखेड़ा', 'ठुड्डी', 'मुरैठा', 'अंगिया', (श्याम सुन्दर घोष); 'बहुतेरा', 'लच्छेदार', 'छलांगे', 'उधेडबुन', (संसारचन्द्र); 'ससुर', 'ससुर के नाती', 'सेठवा', 'खूसंट', 'बुढ़ऊ', (श्रवणकुमार उर्मलिया); 'मत्थी', 'बकरा', 'मिमियाना', 'टेबुल', 'थाना', (अमरेन्द्र कुमार) आदि ग्राम्य शब्दों का प्रयोग मिलता है।

अपशब्दों का चयन

व्यंग्यकार व्यंग्य को सम्प्रेषित करने के लिए अशिष्ट या अपशब्दों का प्रयोग करते है। शिष्ट शब्द कभी-कभी व्यंग्य के अभिष्ट की सशक्त अभिव्यक्ति नहीं कर पाते हैं, तब व्यंग्यकार विसंगतियों के प्रति अपने आक्रोश को आलोचनात्मक रूप से व्यंजित करने के लिए अपशब्द / अशिष्ट शब्दों का प्रयोग करता है। शिष्ट समाज में इन शब्दों का प्रयोग अभद्र माना जाता है, किन्तु साहित्यिक अभिव्यक्ति के लिए ये शब्द अपकर्षसूचक नहीं है। इसके कुछ उदाहरण देखिए -

"वह सन्यासी को चांटा मारती है और कहती है, 'लुच्चा, बदमाश कहीं का।"[81]

यहाँ सन्यासी द्वारा परेशान महिला अपने आक्रोश को अपशब्दों के माध्यम से प्रकट करती है। जिसके द्वारा सन्यासी की चरित्रगत विशेषता को व्यंजित किया गया है।

"हरामखोर और मुफ्तखोर मतदाता के लिए इतना ही काफी है।"[82]

"तूने हरामखोर! मैंने तुझे दारू पिलाई, मुर्गा खिलाया, लेकिन दिखा दी तूने अपने औकात तू कुत्ते की मौत मरेगा रे।"[83]

"अपनी मर्जी से किया था या किसी और हरामजादे ने करवाया था?....."

..... "उन सालों को पेड़ पर चढ़े तुमने स्वयं देखा था कि किसी और उल्लू के पट्ठें ने बताया था?"[84]

"थानेदार मुस्करा रहा था। साला! आज आया है काम का केस।"[85]

थानेदार की व्यावहारिक विशेषता को व्यंजित किया गया है।

"अजी हमारे बाप की क्या बात है। जीवन भर जो कमाया, वह उड़ाया। साले ने यह भी ध्यान में नहीं रखा कि ये जो पिल्ले मैंने पैदा कर सड़कों पर फेंक दिए हैं, इनके लिए भी मेरा कोई दायित्त्व है; और अब वह बूढ़ा हो गया है, बीमार रहता है इसलिए चाहता है कि सौ नहीं तो पचास रूपया महीना तो उसे अवश्य ही

भेजूं।"[86]

यहाँ 'साले' शब्द के प्रयोग द्वारा अधिक बच्चें पैदा करनेवाले बेकार बाप के प्रति पुत्र का आक्रोश व्यंग्यात्मक रूप से प्रस्तुत किया गया है।

"एक यही तो हैं जिसे काम करना अच्छा लगता है, हम सब तो जैसे हरामखोर हैं! बहुत देख रक्खे हैं हमने ऐसे काम करनेवालें! साला सोचता होगा, इसी तरह साहब की नज़र में, पहले तो हम लतियायेंगे तुमको।"[87]

एक ही ओफिस में काम करनेवालें दो कर्मचारियों की आपस में द्वेष वृत्ति को चित्रित किया गया है।

"हरामखोर अमीर सब अपनी धन दौलत को लेकर मतवाले हो रहे थे, साले अपने सामने किसी को कुछ गिनते ही न थे और गिनते भी कैसे, दिमाग सातवें आसमान पर जो रहता था।"[88]

"साले, भ्रष्टाचार के घूस-रेट फिक्स हैं। अगर तु बीस सेर में दस सेर दूध लाता है हो पांच रूपये हफ़्ता देना पड़ेगा। ज्यादा जल डालेगा तो'हफ्ते'के रेट भी बढ़ जायेंगे।"[89]

यहाँ दूध में मिलावट करने के लिए दी जानेवाली घूस पर व्यंग्य किया है।

"यदि किसी बंदर को मैं आदमी कहूँ, तो वह बंदर मुझे पेड़ पर उल्टा लटका कर कहेगा "साला चला था बंदरों की नकल करने।"[90]

"मुझे बीबी पर बेहद गुस्सा आया। पता नहीं यह स्साली बोस के प्रति इतना आदर क्यों प्रकट करती है? मेरी जीभ से तो बोस के लिए बेशुमार गालियाँ छूटती हैं और यह उसे देवता और भगवान न जाने क्या-क्या समझती है। स्साली ने कभी उसे देखा भी नहीं है।"[91]

पत्नी का बोस के प्रति मीठें व्यवहार को देखकर शक्की पति अपने आक्रोश को अपशब्दों के माध्यम से प्रस्तुत करता है।

"अरे उठती है कि नहीं? उठ। मरघट की दिशा में चल। उठती है कि लगाऊं दो लात। पकड़ना तो फूफाजी, सुसरी को। ऐसे नहीं मानने वाली यह कमीनी! उठ हरामजादी! चल कर बैठ चिता पर..... बेले भई, सती मइया की जय।"[92]

यहाँ सतीप्रथा पर व्यंग्य किया गया है। पति के मर जाने पर विधवा स्त्री पर अत्याचार तथा अनेक अपशब्दों की झड़ी लगा दी है।

"आजाद देश में कानून और व्यवस्था के लिए (गैर) जिम्मेदार विभाग तो हर जगह इस नारे को भुनाता ही रहता है, डंडा लहराती हुई खाकी वर्दियाँ यत्र-तत्र-

सर्वत्र यह नज़ारा पेश करती हैं। देता है कि नहीं बे? कि अन्दर करूँ तुझे स्साले?"[93]

सरकारी कर्मचारियों की मनमानी को प्रस्तुत किया है। यहाँ भ्रष्टाचार तथा रिश्वत जैसी विसंगतियों को व्यंजित किया गया है।

"साले हमारे नौकर हैं, हम उन्हें पैसा देते हैं, पर काम नहीं करते। मैं सोचा, "किसकी बात कर रहे हैं? वह बोले – 'अपने दफ्तर की, जहाँ मैं बोस हूँ। मेरे कर्मचारी मेरा कहा नहीं मानते, मेरा सम्मान नहीं करते।"[94]

"ये नये वाले बड़े साहब जब से दफ्तर में आए हैं, लोगों का जीना हराम हो गया है। एक कर्मचारी के शब्दों में – "साले ने हिटलर की तरह टैरर क्रिएट कर रखा है।"[95]

कर्मचारी की हिटलर जैसे बॉस के प्रति नाराज़गी को अपशब्द द्वारा आक्रोशपूर्ण प्रस्तुत किया गया है।

एक ने कहा – "कल सुना है, अनीता बड़े साहब के घर गई थी। साले की फैमिली भी यहाँ नहीं है।"

दूसरा बोला – "बड़ा कमीना है। जहाँ भी रहा है इसने लड़कियों को बरबाद किया है।"

तीसरा बोला – "अनीता कौन सी दूध की धुली है। बह भी तो छिनाल है।"[96]

दफ्तर में हो रही अनैतिकता को वर्णित किया गया है।

इस प्रकार व्यंग्यकार ने पात्र की चरित्रगत विशेषताओं तथा विसंगतियों का प्रहारात्मक चित्रण प्रस्तुत करने के लिए अपशब्दों का यथास्थान प्रयोग किया हैं।

नवनिर्मित या व्यंग्यज शब्दों का चयन

साहित्यकार खुद अपने उदेश्यपूर्ति के लिए जिन शब्दों का निर्माण करता है उसे नवनिर्मित शब्द कहते हैं। हिन्दी व्यंग्य निबंधों में अनेक व्यंग्यकारों ने उद्देश्य तक पहुँचने के लिए इस प्रकार के शब्दों का निर्माण किया है। व्यंग्य-भाषा में इसे 'व्यंग्यज' शब्द भी कहते है। इन शब्दों का निर्माण किसी कोश के अंतर्गत नहीं होता है। व्यंग्य साहित्य में ऐसे व्यंग्यज शब्दों का निर्माण दो भाषा के शब्दों को मिलाकर भी किया गया है। कुछ नवनिर्मित या व्यंग्यज शब्दों के उदाहरण यहाँ प्रस्तुत किये गये हैं –

"बलराज मधोक जनसंध के अध्यक्ष के रूप में भारतीयों का फिर से

भारतीयकरण करने में लगे थे, याने दूध को पानी से धोकर शुद्ध कर रहे थे कि उन्ही का 'मधोकीकरण' कर दिया गया। मधोक ने अलग लोकतान्त्रिक जनसंघ बनाया जिसने यह सिद्ध किया कि जिसके अध्यक्ष रहे वह जनसंघ लोकतान्त्रिक नहीं है। नहीं, नानाजी का 'मधोकीकरण' नहीं हुआ। फिर क्या हुआ?"

यहाँ 'मधोकीकरण' शब्द नवनिर्मित है। जिसके द्वारा राजनैतिक व्यंग्य प्रस्तुत किया गया है।

"दंगाई! शांति समिति बन जाती है जिसके सदस्य दंगाई होते है।"[98]

'दंगा' शब्द से 'दंगाई' शब्द बनाया है। यह शब्द यहाँ दंगा करने करानेवालों के संदर्भ में व्यंजित हुआ है।

"देश आगे बढ़ा है। यों पहले जो क्लर्की की नौकरी माँगने जाता था, महज मैट्रिक होता था और उसे मिल भी जाती थी। अब शैक्षणिक प्रगति उतनी अच्छी है कि क्लर्की की नौकरी मांगने वाला बी.ए., एम. ए. से कम नहीं होता और उसे भी क्लर्की नहीं मिलती।"[99]

'क्लर्की' शब्द द्वारा बेकारी की समस्या को उजागर किया है।

"अभ्यास से क्या सिद्ध नहीं होता? यदि हम सब साहित्यकार उस दिशा में एक या दो प्रति पग उठायें तो भाषा का सरलीकरण, साधारणीकरण और लोचमयीकरण होना भी निश्चित ही है।"[100]

सरल हिन्दी के पक्षपातियों पर व्यंग्य करते हुए हिन्दी की 'लचीली' प्रवृत्ति के लिए व्यंग्य करते हुए व्यंग्यकार ने 'लोचमयीकरण' शब्द का निर्माण किया है।

"सड़क पर ट्रक के नीचे कुचला जाना जिस प्रकार पात्र की स्कुटच्चरता का प्रमाण है वैसे ही हवाई जहाज की दुर्घटना का शिकार बनना वर्गगत महत्ता का।"[101]

'स्फुटच्चरता' शब्द मध्यवर्ग की आर्थिक स्थिति को सूचित करता है।

"तुम्हारे ऊपर मुझे पूरा भरोसा है..... तुम कुत्तागिरी की सारी मान्यताएँ पूरी करोगे।"[102]

यहाँ 'कुत्तागिरी' शब्द राजनीतिक दावपेच को व्यंजित करता है।

"कारोबार और राजनीति के क्षेत्र तो ऐसे हैं कि इनमें जेंटिलमैन उतरते नहीं, और यदि उतर ही जाये तो या तो उनकी जेंटिलमैनी चौपट होती है या कारोबार और राजनीति ही। समझदार लोग इसी कारण जेंटिलमैनी चौपट हो जाने देते हैं, कारोबार और राजनीति नहीं।"[103]

जेंटिलमैन आदमी कारोबार और राजनीति में आता है तो अपना ईमान

अर्थात् 'जेंटलमैनी' खो देता है। इस बात को व्यंजित किया गया है।

"शिक्षण संस्था में जो लोग प्यारोलोजी का नया विषय सिखाना चाहते हैं उन्हें समस्त सरकारी सुविधाएँ प्राप्त होगी। यदि प्यारोलोजी की माँग विद्यार्थीयों में बढ़ी तो उन्हें प्रेमस्नातक, प्रेम अनुस्नातक तथा प्रेम महा महोपाध्याय की डिग्रीयाँ प्रदान की जाएंगी..... होम साइंस की तरह प्रेम साइंस भी एक नया विषय होगा।"[104]

"गधों का रस निचोड़ने से जो तत्त्व प्राप्त होता है, उसका नाम गधात्त्व है। यह 'गधात्त्व' एक प्रकार से सुख, शांति, संतोष, नम्रता, सहनशीलता का सामूहिक गुण है।"[105]

यहाँ 'गधा' शब्द में 'त्त्व' प्रत्यय लगाकर 'गधात्त्व' शब्द का निर्माण किया है।

"अंग्रेजियत जब सारे देश ने नहीं छोड़ी है, तू क्यों छोड़ बैठी है; पुरानी दिल्ली! तेरी गलियां और कूचे क्यों धड़कते है!"[106]

'अंग्रेजियत' शब्द यहाँ अंग्रेजीपन (पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव) को सूचित करता है।

"हमारे नेता विश्वशांति और निरस्त्रीकरण के सिलसिले मे अधिक व्यस्त हैं।"[107]

"राजधानी विश्वविद्यालयों में भाषा विभाग में दो प्रोफेसर, चार रीडर और दो प्रध्यापक हैं जो तीन-तीन विद्यालयों को रंगबिरंगी विदेशी भाषाएँ पढ़ाते हैं और पाँच-पाँच हजार महीने जेबस्थ करते हैं।"[108]

यहाँ जेब 'शब्द' का 'जेबस्थ' करके विश्वविद्यालयों में ऊँचे वेतन पर पढ़ानेवाले लोगों पर व्यंग्य किया गया हैं।

"भगवान जाने घसीटन में पड़ना ऐसी क्या बला है कि यहाँ के रहने वाले इससें बुरी तरह भयभीत रहते हैं। एक रिक्शावाला सवारी से कह रहा था कि साहब यह अठन्नी जरा घिसी हुई है, इसे लेकर मैं घसीटन में पड़ूं। एक सफेदपोश रईस को मैंने यह कहते सुना कि यासीन से निकाह करके मैं घसीटन मे पड़ गया हूँ।"[109]

यहाँ 'घसीटन' शब्द का अर्थ आपत्ति या लफड़े में पड़ने के संकेत को बताया है।

"कमेटी-कला की इन प्रारम्भिक बातों को जानना हर कुर्सीमानुष के लिए लाज़िमी है। इस कला में काफी सरगर्मी से अनुसंधान हो रही है। उन नयी खोजों

से भी अवगत होना कुर्सी बनाए रखने के लिए निहायत जरूरी है।"[110]

"मालूम है, जंगलों का सरकारीकरण हो चूका है।"[111]

"किराये के मकान में ही रहकर मैंने नौकरी की, प्रमोशन लिया और अब रिटायरासन्न हो राहा हूँ।"[112]

यहाँ 'रिटायर' (अंग्रेजी) और 'आसन्न' (संस्कृत) शब्द को जोड़कर 'रिटायरासन्न' शब्द का निर्माण किया है।

"फिल्मावलोकन के इलाके में कई दशकों तक कसरत करने के बाद यह घोषणा करते हुए अपार हर्ष हो रहा है कि हमारी गली के नुक्कड़ पर जहाँ कभी पत्र-पत्रिकाओं का एक मिनी स्टाल हुआ करता था, वहीं विडियो कैसेटालय खुल गया है।"[113]

यहाँ 'केसेट' (अंग्रेजी) और 'आलय' (संस्कृत) शब्दों को जोड़कर 'कैसेटालय' शब्द बनाया गया है, जो आधुनिक युग में आ रहे परिवर्तन को सूचित करता है।

'सही-सही वजह पूछिए तो पहाड़ों पर अब शरीफों के जाने लायक बची ही कहाँ है? वहाँ या तो हनीमूनी जोड़े जाते हैं, या फिर ऊँट!"[114]

'हनीमून' शब्द का 'हनीमूनी' विशेषण बनाकर व्यंग्य किया गया है।

"किसी स्टार होटल में अंग्रेजी के इस नशे में संम्पूर्ण जेबहरण हो जाता है, तब भी पता नहीं चलता।"[115]

यहाँ 'जेबहरण' शब्द जेब कट जाने के संदर्भ मे प्रस्तुत हुआ है।

"इस लड़के का जुगराफिया यह था कि वह कुल मिलाकर कमर से जितेन्द्र बॉडी से प्रेमनाथ और शक्ल से पेंटल नज़र आता था।"[116]

"आशिक मिजाज मरीज़ों का कहना है कि होमियोपैथी की तर्ज पर रोमियोपैथी को क्यों नहीं अपनाया गया। इस संबंध में हमें इतना ही कहना है कि होमियोपैथी की तरह रोमियोपैथी भी धीमा इलाज करती है और हमारे रोगियों को ऐसी चिकित्सा पद्धति की जरूरत थी, जिससे उनका कल्याण शीध्राति-शीध्र हो।"[117]

"अफसर ने कहा - 'जयशंकर कुछ और कह रहा था?' 'हां, सर, वह कह रहा था की वह आपका ट्रांसफर करवा कर रहेगा। अफसर हंसा, 'चिन्ता मत करो, कल वह खुद 'ट्रांसफरित' हो जाएगा।"[118]

'ट्रान्सफर' शब्द को नये 'ट्रांसफरित' में रूपांतरित करके व्यंग्य किया है।

"अब 'भ्रष्टाचार' न होकर 'भद्राचार' बन गया है।"[119]

यहाँ 'भ्रष्टाचार' को 'भद्राचार' बताकर सामाजिक विसंगतियों पर कटु प्रहार किया है।

व्यंग्य के लिए प्रयोग हुए नवनिर्मित (व्यंग्यज) शब्द को डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी ने 'व्यंग्य शब्द'[120] कहा है। व्यंग्यज शब्द बहुशब्दीय है। दो शब्दों को जोड़कर इसका निर्माण किया जाता है। हिन्दी व्यंग्य निबंधों में ऐसे नवनिर्मित या व्यंग्यज शब्दों का प्रयोग उदेश्यपूर्ति के लिए किया गया है। इसी प्रकार अन्य व्यंग्यज शब्द :

'सड़किया' (सड़क छाप), 'आकंठ टांग', 'संयोजक गंघ' (संयोजक की विशेषता हेतु), 'सर्वोदयियों', 'रेडियोधर्मी' (अमेरीका परस्त), 'फुलीशम्', 'वलगरम्', 'कूहड़म्', 'वाशिंगटनी', 'दंगाई', 'मधोकीकरण', (हरिशंकर परसाई); 'कत्थकिये' (कत्थक करनेवाला), 'सितारिये' (सितार बजानेवाला), 'अध्यक्षाई', 'खंजरसम' (कलम के लिए), 'बिल्लौसती', 'चमचायत', 'घटियाकरण', 'छिलकावैभिन्न', 'टायरत्त्व', 'टायराना', 'दिल्लीमुखी', 'राजेशखन्नत्व', 'हाईजैकाभिलाषा', 'चिन्तनाते', (शरद जोशी); 'दोसाजीवी', 'कहवाघर' (काफी हाउस), (रवीन्द्रनाथ त्यागी); 'इण्टेलेक्चूअलनुमा', (श्रीलाल शुक्ल); 'सस्पेंसनात्मक', 'टेंसनाइजेशन', 'जुगाड़मेंट', 'शिकायतवीर', 'मतलब भक्त' (मतलबी), 'क्रीड़त्त्व', 'आशीर्वादिस्ट', (लतीफ घोघी); 'पाकेटमारिता', 'सरकारीकरण', (अजातशत्रु); 'व्यंग्यकारयित्री', 'काविता पात', 'जेबत्त्व', (शंकर पुणताम्बेकर); 'लवेरिया' (प्रेम), 'देशी भजन'(गालियाँ), 'डिस्को कल्चर' (आाधुनिक सभ्यता), 'नलघट'(सरकारी नल), (सुदर्शन मजीठिया); 'अंग्रेजियत', 'पुलिसिया', 'पुलिसिए', (प्रेम जनमेजय); 'जुगराफिया', 'हनीमूनी', (सूर्यबाला); 'वोटनीय', 'शिलाखण्ड बुढ़िया' (जर्जरित), 'इश्किया', 'जुगराफिये', (के.पी.सक्सेना); 'भोंपूतंत्र' (प्रजातंत्र), (अमृतराय); 'लवमय', 'मुर्खिस्तान', 'जेबहरण' (जेब कटना), 'चेयरविराजनी', 'तलाकित पत्नी', 'वोटवादी', 'हीरोइनी नज़रें', 'प्रेम रिटायर', (मधुसूदन पाटिल); 'एडमीशनमय', (नीरज व्यास); 'कम्प्यूटरीकरण', (जगतसिंह बिष्ट); 'इन्जीनियराइन' (इजीनियर की पत्नी), (अमरेन्द्र कुमार) आदि।

इस प्रकार मूल शब्दों में उपसर्ग, प्रत्यय, कारक, विशेषण, क्रियाविशेषण, बहुवचन, लिंग, विभक्ति आदि लगाकर अथवा उन्हें बेमेल संधि रूपों के द्वारा विकृत करते हुए 'व्यंग्यज' शब्दों में ढाल कर व्यंग्यकरों ने सटीक व्यंग्य किया है।

विविध भाषिक उपकरण

व्यंग्य निबंध की शब्द संरचना के दो स्तर हैं। जिसके प्रथम स्तर में तत्सम, विदेशी, ग्राम्य, अपशब्द और व्यंग्यज शब्दों का चयन किया गया है। दूसरे स्तर में वाक्यों का चयन व्यावहारिक उपकरणों के आधार पर होता है। इसमें मुहावरें, लोकोक्तियाँ, सूक्तियाँ, परिभाषा, काव्य-पक्तियाँ तथा पैरोडी आदि का प्रयोग मिलता है।

मुहावरें

हिन्दी साहित्य में मुहावरा का कोशगत अर्थ- बोलचाल, बात-चीत, लाक्षणिक या क्वचित् व्यंग्यार्थ में रूढ़ वाक्य का प्रयोग, अभ्यास,.... ऐसा माना गया है।[121] मुहावरों का प्रयोग वाक्यों में वाक्यांश के रूप में होता है। मुहावरा सामान्य अर्थ से हटकर विशिष्ट तथा विलक्षण अर्थ की प्रतिति कराता है। मुहावरों में व्यंग्य को प्रस्तुत करने की अद्‌भुत क्षमता होती हैं। विसगतियों तथा विषमताओं का आक्रोशपूर्ण तथा व्यंगात्मक चित्रण के लिए अनायास ही मुहावरों का प्रयोग किया जाता है।

व्यंग्य निबंध में संक्षिप्तता अनिवार्य तत्त्व है। संक्षिप्त में कथ्य को व्यंजित करने के लिए मुहावरों का माध्यम व्यंग्यकार के लिए 'नावक के तीर' समान है। साठोत्तर हिन्दी व्यंग्य निबंधों में मुहावरों का प्रयोग खुल कर किया गया है। शैली वैज्ञानिक दृष्टि से मुहावरों का विचलित प्रयोग हुआ है। व्यंग्य साहित्य में मुहावरों का प्रयोग व्यंग्यानुकूल दृष्टि से अधिक हुआ है। विविध प्रकार के मुहावरों का व्यंग्यात्मक जायजा लीजिए

"जनता पार्टी और सरकार का जो रवैया रहा है, उसे खालिस जबलपुरिय अपने मुहावरे मे कह रहे हैं - '<u>खटिया खड़ी हो रही</u> है, गुरू!' जिस राजनारायण को जोकर समझते थे, उसने असलेट दे दी।"[122]

"ये ऐसे नीच लोग थे कि जब ग़ालिब मर गये और उनके प्रशंसक रोने लगे, तो इन्हे बुरा लगा। गालिब के लिए इनते लोग रोयें! <u>कलेजे पर साँप लोट गया</u>।"[123]

गालिब के मरने के पश्चात् उनकी याद में बनावटी आंसू सारनेवाले लोगों पर व्यंग्य किया गया है।

"पर अब अँग्रेजों की <u>खटिया खड़ी हुए</u> और प्रजातन्त्र को आये कितने साल बीत गये।"[124]

अंग्रेजों को भारत से निकाल देने की बात को 'खटिया खड़ी हुए' मुहावरे से सूचित किया गया है।

"आलोचना तो अन्धे की लाठी है और इसी कारण 'मापदण्ड' शब्द में 'दण्ड' का प्रयोग किया गया है।"[125]

"जब जूता बन गया तो उसको लेकर कहावतें व मुहावरें भी बनने लगे। मियाँ की जूति मियाँ का सिर, चूते चाटना, जूतियाँ उठाना, जूतियाँ चटकाना और जूतों में दाल बाँटना जैसे मुहावरें जुतें के प्रताप से ही बने।"[126]

"मरने के बाद भी तुम्हारी जूता मारने की आदत नहीं गयी।"[127]

"वह बोली बड़े आये नाक वाले। मैं कहती हूँ इतने बच्चे पैदा करवा दिये तब कहाँ गई थी तुम्हारी नाक! रोज परिवार नियोजन वाले तुम्हे तलाशते रहते थे। मैं कहती हूँ, परिवार नियोजन करवा लेते तो क्या तुम्हारी नाक कट जाती।"[128]

अधिक बच्चें पैदा हो जाने से पत्नी अपने पति को आक्रोश पूर्ण तथा व्यंग्यात्मक रूप से ताने मारती है।

"मगर लागों के सिर पर यह न जाने कैसा बिजली का भूत सवार है कि दिन में दस-पचीस बार बिजली गयी नहीं कि हाय-तोबा मचने लगी। मैं कहता हूँ, अच्छा हुआ! आँख फूटी पीर गयी। इसमें इतना रोना-पीटने की क्या बात है? खुशी मनाओं।"[129]

यहाँ बिजली बार-बार चले जाने की समस्या पर व्यंग्य किया गया है।

"यहाँ से कई योजनाएँ गुजरी है, पर रूकी नहीं। जो भी योजना रूकी उसे इसी रास्ते के पक्के मकानवालों ने लूंटा, उस पर बलात्कार किया, जिन गरीब लोगों ने इस अत्याचार के खिलाफ मुँह खोला उन्हें बुरी तरह से मुँह की खानी पड़ी।"[130]

प्रशासनिक विसंगति पर व्यंग्य किया गया है।

"शरीर पर बीवी का राज था पर दिल के कमरे में लैला अपने साजो-सामान के साथ घोड़े बेचकर सो रही थी।"[131]

यहाँ आदमी की चरित्रगत विशेषता को व्यंजित किया गया है।

"पुरूष दस जगह, घास खाकर भी मूँछे ऊँची किये, पगड़ी सलामत लिए फिरता है। पुरूष अपनी पगड़ी सलामत रख, अधिक से अधिक स्त्रिओं की पगड़ी उछालना चाहता है।"[132]

"नाक न कट जाए इसके लिए व्यक्ति क्या-क्या नहीं करता? चुनाव जितने

के लिए वह तन, मन और धन इसलिए लगा देता है कि उसकी नाक बच जाए, इसीलिए घर-घर जाकर वोटरों के आगे नाक रगड़ता है कि हे वोटर, मेरी लाज रख ले, लेकिन वो हार जाता है और उसकी नाक कट जाती है।"[133]

इन मुहावरों के द्वारा चुनाव के समय नेता को प्रतिक्रिया पर व्यंग्य किया गया है।

"कल जब भरी महफिल में कुछ बेतकल्लुफ मित्र हथेली पर सरसों जमाने की कला के संबंध में बढ़-चढ़कर बातें कर रहे ये तो मैं शर्म से पानी-पानी हो रहा था।"[134]

"बे बात की बात को कुछ नहीं होती, पर बात बहुत बनायी जाती है, जान बूझकर या फिर स्वयं बन जाती है। बात का बतंगड़ खड़ा हो जाता है, तिल का ताड़ और राई का पर्वत बन जाता है। अगर कोई प्रयत्न करके सत्य तक पहुँचे तो 'खोदे पहाड़ तो निकले चुहिया' का मसला नज़र आता है।"[135]

" 'त' से तिल, 'ता' से ताड़। अध्यापक बच्चों को तिल से ताड़ बनाने वाले उद्योगों की बाबत जानकारी दे सकें तो अच्छा।

"जहाँ तक अकल का सवाल है, उसके बगैर तो बड़ी संख्या में काम चलाया जा रहा है और बखूबी चल रहा है। मगर कुछ ऐसी चीजें भी हैं, जो अक्कल से ज्यादा जरूरी है, क्योंकि अकल घास चरने जा सकती है, मगर आदमी यह काम नहीं कर सकता।"[137]

"हमने इतने लचीले, फुर्तीले एवं गर्वीले बिछौनेनुमा व्यक्तित्त्व देखे हैं कि उनकी याद करके दाँतो तले ऊँगली दबा लेनी पड़ती है।"[138]

"पर मेरा भी एक सिद्धांत है। पुरूष-जाति का कोई भी यदि सड़क पर गिरता पड़ता है, तो मैं उसे नज़रअन्दाज़ कर आगे बढ़ जाता हूँ। मेरे कान में जूँ भी नहीं रेंगती। पर यदि नारी-जाती का कोई अदद गिरता है तो मेरे पैर वहीं जम जाते हैं। मैं मौका-ए-वारदात से आगे बढ़ ही नहीं पाता।"[139]

पुरूषों की स्त्रियों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण लोलूपता पर व्यंग्य किया गया है।

"कुर्सी ही सब कुछ है। कुर्सी की महिमा अपार है। कुर्सी के लिए चुनाव के दिनों नेता नाक रगड़ रहे हैं। नाक रखने के लिए नाक रगड़ना जरूरी है। दूसरों की नाक काटने के लिए और अपनी नाक बचाने के लिए नेता इन दिनों परेशान हैं। इन्हें देखकर मतदाता नाक-भौंह सिकोड़ रहे हैं फिर भी वे गिड़गिड़ा रहे हैं।"[140]

चुनाव के दौरान एक नेता दूसरे प्रतिस्पर्धी नेता को मात देने के लिए किस

तरह के प्रयास करता है। इसको मुहावरों के द्वारा यहाँ व्यंजित किया गया है।

मुहावरों के कुछ अन्य उदाहरण निम्नानुसार है -

'जाँच करवाना', 'अंगूठा दिखाना', 'जैब में रखना', 'गला घोटना', 'गर्दन पकड़ना', (हरिशंकर परसाई); 'कमर कसना', 'चौंधिया देना', 'मुँह छिपाने की स्थिति होना', 'नाक सुड़कना', (शरद जोशी); 'आँख मारना', 'दाँतो तले अपनी उँगली दबाना', 'आँखें लड़ाना', 'कलेजा दहल गया', 'श्रीगणेश करना', (रवीन्द्रनाथ त्यागी); 'टाँग घुसेड़ना', 'डींग हाकना', 'नाक सिकोड़ना', 'अड़िग रहना', 'हाथ-पैर फैंकते रहना', (श्रीलाल शुक्ल); 'अपना उल्लू सीधा करना', 'दाँतो तले उँगली दबा देना', 'आँखें लड़ाना', 'मुँह में पानी आ जाना', 'कौड़ी मारना', 'ना-नकुर करना', 'दिल पर साँप लोटना', 'खुजली का शिकार होना', 'चना दाल मसलना', (लतीफ घोंघी); 'सिर आँखों पर रखना', 'मुँह अँधेरे', 'टाँग अड़ाना', 'तलुबे चाटना', 'खून खौलना', 'बैरों से सिर मारता रहाना', 'सर आँखो पर', 'बै बात की बात', 'अंगूठा दिखाना', 'माथे पर त्योरियाँ चढ़ना', 'अपनी चादर देख कर पैर पसारे', (नरेन्द्र कोहली); 'सिरदर्द बनाना', 'कैंची चलाना', 'सिर झुकाना', 'नाक रगड़ना', 'बात का बतंगड़', 'पैरों नीचे से जमीन खिसकना', 'नाक-भौ सिकोड़ना', 'दाँत पीसना', (केशवचन्द्र वर्मा); 'नौं दो ग्यारह हो गये', 'लुटिया ही दुबो दी', 'नाक में दम कर रखना', 'नाक रगड़ना', (अमृत राय); 'दाँतों तले उंगली दबाना', 'मूँछो पर ताव देना', (शंकर पुणताम्बेकर); 'दूसरे की चादर खींचना', 'धज्जियाँ उड़ाना', 'बैंड बजाना', खजूर के पेड़ पर लटकना', 'दिल टूटना', 'जूतों की वर्षा करना', 'आँखें चूराना और मारना', 'नाक काटना', 'रोटी के लाले पड़ना', 'कब्र खोदना', 'खून चूसना', 'घास ड़ालना', 'हातिमताई बने फिरना', (सुदर्शन मजीठिया); 'दुखती रग को छेड़ना', (प्रेम जनमेजय); 'टाँग अड़ाना', 'ठोकर मार देना', 'त्यौरियाँ चढ़ाना', 'पत्थर की लकीर होना', 'मुँह में पानी आना', 'पेट काटना', 'धूल फाँकना', 'अपने मूँह मियाँ-मिट्ठू बनना', (रोशनलाल सुरीरवाला); 'मक्खनबाजी करना', 'दाँत निकालना', 'मुँह लगना', 'बछिया के ताऊ', 'हाथ पीले करना', 'नौ-दो ग्यारह होना', 'नाँक रगड़ना', (बरसानेलाल चतुर्वेदी); 'माथे पर बल डालना', 'आस्तीन का साँप', 'बाँसों उछछते हुए', 'ढाक के तीन पात', 'उलटेबाँस बरेली के', (सूर्यबाला); 'कलेजे से लगाए', 'सिर उठाना', 'साँप सूँघ गया', 'चूल्हे पर बथुआ छौंकते', 'सीना चौड़ा हो गया', 'तेल तथा तेल की धार देखो', 'कलेजा हिलना', (के. पी. सक्सेना); 'सिर पिटना', 'अपने पाँव पर कुल्हाड़ी

मारना', (रामनारायण उपाध्याय); 'नाक कटाना', 'छक्के छुड़ाना', 'टेढ़ी खीर होना', 'गुदड़ी के लाल', 'लकीर के फकीर', 'बगले झाँकते लगना', (शेरजंग गर्ग); 'काटो तो खुन न निकलना', 'नाक रगड़ना', (हरि जोशी); 'लकीर के फकीर', 'मुँह ताकना', 'खटिया तोड़ना', 'खटिया पकड़ लेना', (उमाशंकर चतुर्वेदी); 'मुँह की खानी पड़ेगी', 'कानों पर जूँ ही नहीं रेंगती', 'तिल का ताड़ बनाना', 'दिल पर साँप लोट गया हो', (अमरेन्द्र कुमार); 'नो दो ग्यारह होना', 'डंके की चोट पर करना', (गिरीश पंकज); 'पांव तले से जमीन खिसकना', 'जख्मों पर नमक छिड़कना', 'राई का पहाड़', 'देर आये दुरस्त आये', (रूपनारायण शर्मा); 'नाक-भौं सिकोड़ना', 'नक्कारखाने में तूती', 'ढ़ाक के तीन पात होना', 'आंहे भरना', 'लकीर पीटते रह गए', 'बगले झांकना', 'कान पर जूँ तक नहीं रींगती', 'गले पड़ा ढोल पीटना', 'मुँह काला करना', 'छाती पर मूंग दलना', (संसारचन्द्र); 'नक्कार खाने की तूती', 'सरों पर मड़राने लगना', 'नाक-भौं सिकोड़ना', 'मुंछ मुड़ाना', 'मुँछ उखाड़ना', (आत्मानंद मिश्र); 'पांव के नीचे से जमीन खिसक जाना', (अलका पाठक); 'चुल्लू भर पानी में डूबना', 'कलेजा मुँह को आना', (निरज व्यास) आदि मुहावरों के प्रयोग भी मिलते हैं।

मुहावरें व्यंग्य को प्रस्तुत करने का सशक्त माध्यम है। व्यंग्य निबंधों में व्यंग्य का तीव्र एवं प्रहारात्मक रूप प्रस्तुत करने के लिए व्यंग्यकारों ने मुहावरों से युक्त भाषा का प्रयोग यथास्थान किया है।

लोकोक्तियाँ

लोकोक्तियाँ लोगों में समान रूप से प्रचलित होती हैं। इसलिए इसे कहावत भी कहते हैं। लोकोक्तियाँ मानव जीवन का वह विशिष्ट अंग है, जिसमें मनुष्य इसका प्रयोग अपनी बात को प्रस्तुत करने के लिए करता है। लोकोक्ति पूर्ण वाक्य होती है। इसके पीछे कोई कथा या नीतिपरक बातें रहती है। किसी तथ्य के समर्थन तथा खण्ड़न के लिए लोकोक्ति का प्रयोग होता है।

"लोकोक्ति में गागर में सागर भरने की प्रवृत्ति काम करती है। इसमें जीवन के सत्य बड़ी खूबी से प्रकट होते हैं। यह ग्रामीण जनता का नीतिशास्त्र है। लोकोक्तियाँ मानवी ज्ञान से घनीभूत रत्न है, जिवन में बुद्धि और अनुभव की किरणें फूटनेवाली ज्योति प्राप्त होती है। लोकोक्तियाँ प्रकृति के स्फुलिंग (रेडियो-ऐक्टिव) तत्वों की भांती अपनी प्रखर किरणें चारों और फैलाती रहती है।

लोकोक्तियाँ साहित्य संसार के नीति-साहित्य (विजडम -लिटरेचर) का प्रमुख अंग है। सांसारिक व्यवहार पटुता और सामान्य बुद्धि का जैसा निदर्शन कहावतों में मिलता है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है।"[141]

मुहावरों की तरह लोकोक्तियाँ व्यंग्य को प्रभावकारी बनाने का एक सशक्त माध्यम है। व्यंग्य निबंधों में लोकोक्तियों का प्रयोग हुआ है। किन्तु कहीं-कहीं व्यंग्य के आक्रोश और तिव्रता देखते हुए लोकोक्ति की संरचना में बदलाव आ गया है। कुछ उदाहरण यहाँ दृष्टव्य है-

"भला जिस कौम का इतिहास कुल 300 सालों का हो और संस्कृति हो हीनहीं, उसके नेता को कहीं इतिहास पढ़ाया जाता है। हमारे देश के कुछ लोग यह हरकत करते हैं। वे भैस के आगे बीन बजाते हैं। इस पर हमारी भैंस वही प्रतिक्रिया करती है जो आपके रेगन ने आन्द्रोपोव के प्रस्ताव पर की है।"[142]

"मंत्री कहता हैं, 'साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप'।"[143]

"एक गन्दी मछली पूरे तालाब को गन्दा कर सकती है तो भैंस क्या पूरी तरह उतरना क्या परिणाम उत्पन्न करता होगा, कल्पना कर सकते हैं।"[143]

"पूर्वी उत्तर प्रदेश पर ईश्वर की अनुकम्पा यथावत् जारी है। पहले सूखा पड़ता है और फिर बाढ़ आती है। इस दिशा मे सारा कार्यक्रम निश्चित सा रहता है आर उसमें ईश्वर देर करता है और न अंधेर।"[145]

'ईश्वर के घर देर है अंधेर नहीं' लोकोक्ति के स्वरूप संरचना में परिवर्तन करके व्यंग्यकार ने स्थितिगत विसंगति पर प्रहार किया है।

"आजादी के बाद हमारे देश में गधों ने काफी प्रगति की। वे काफी ऊँचे पदों पर पहुँचे और किसी-किसी स्थिति में तो मन्त्री और राजदूत तक नियुक्त हुए। इसी स्थिति को देखते हुइ कवि को कहना पड़ा कि 'जब खुदा मेहरबान होता है, तो गधा पहिलवान होता है।"[146]

यहाँ लोकोक्ति द्वारा हमारे देश की प्रशासन व्यवस्था पर करार व्यंग्य किया गया है।

"'रधुकुल रीति सदा चली आई। प्राण जाँय, पर वचन न जाई।' प्राण भला वचनों के सामनें क्या हैं। हमारे तो प्राण ही हमारे वचनों में बसते हैं। सारा देश बस वचनों ही वचनों पर चल रहा है।"[147]

वर्तमान युग में मानवमूल्यों में आये परिवर्तन को लोकोक्ति के द्वारा व्यंजित किया गया है।

"विद्या-बुद्धि के दाता गणेशजी के होते हुए भी गाँव में काला अक्षर भैंस के बराबर माना जाता है।..... इसलिए गणेशजी साक्षरता के साथ-साथ निरक्षरता के भी ठेकेदार बने रहे।"[148]

"मेरे मन में अनेक शंकाएँ उठ रही थी। आखिर मेरी हथेली ही कौन सी शामघाट है, जिसे सरसों उगाने के लिए रेखांकित कर दिया जाए। माना कि सरसों उगाने के संबंध में मेरा ज्ञान बिलकुल 'काला अक्षर भैंस बराबर' है फिर भी मैंने आज तक अपनी इस अहल्या भूमि को किसी को लीज पर नहीं उठाया।"[149]

"उसका खामोश हो जाना, या तगड़े विपक्षी वकील की भाषा में, दूध का दूध और पानी का पानी हो जाना।"[150]

"भैंस के आगे बीन बजाओ तो वह पगुराएगी परंतु उसके काली-काली चमड़ी की प्रशंसा में चार चाँद लगाओ तो वह दूध देगी ही। जो सुंदर है, आकर्षक है, उसकी प्रशंसा करेगे तो उसका अहं तुष्ट होगा, परंतु जो असुंदर है उसकी प्रशंसा करोगे तो वह आपका गुलाम हो जाएगा।"[151]

अपनी प्रशंसा सुनकर खुश होने वाले मनुष्यों पर व्यंग्य हुआ है।

"इन लोगों के मुँह से जीवन-मूल्यों की बातें करना कुछ वैसा ही लगता है जैसे 'सौ-सौ चूहे खाय के बिलाई हज को चली।' मूल्यों का हास 'शताब्दी अेक्षप्रेस' की गति से हो राहा है और यदि यही कम रहा तो भारत राजनीति किस अंधे कुए में जाकर गिरेगी, कहा नहीं जा सकता।"[152]

राजनीति में हो रहे मानव-मूल्यों के पतन पर यहाँ व्यंग्यात्मक प्रहार किया गया है।

"नेता होने का भ्रम पालने वालों की संख्या वैसें ही अधिक थी, प्रभु की कृपा से उनकी संख्या दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती चली जा रही है।"[153]

यहाँ 'दिन दूनी रात चौगुनी' लोकोक्ति द्वारा राजनीति के नेताओं की बढ़ती संख्या को सूचित किया है।

"हिन्दुस्तान का एक नायब फल खरबूजा है। इसकी खूबी यह है कि खरबूजा खरबूजे को देख कर रंग बदलता है। इस फल ने हमारे देश की राजनीति को खतरे की हद तक प्रभावित किया है। इस दृष्टि से भारत का राष्ट्रीय फल खरबूजा ही माना जा सकता है।"[154]

"जिस किसी को अंग्रेजी की पूरी वर्णमाला की भी जानकारी है, वह सिर्फ अंग्रेजी का ही इस्तेमाल करके स्वयं को गौरवान्वित महसूस करता है, हालाँकि

हमारी नब्बे प्रतिशत आबादि को अंग्रेजी की जानकारी काला अक्षर भैंस बराबर ही है, फिर भी कुशल भैंस पालने वालों के सामने हम अपनी-अपनी भौंसों को पहचानते हैं।"[155]

अंग्रेजी भाषा का अल्प ज्ञान रखनेवालों पर व्यंग्य किया गया है।

"हवन करते हुए हाथों को जलने से बचाने के लिए और मेहनत से उपजाये हुए खाद्य को इंसान के मुँह तक पहुँचाने मे इस बेजान औजार चमचे ने जो भूमिका अदा की उसका उल्लेख किये बिना मानव इतिहास अधूरा रहेगा।"[156]

यहाँ चमचागीरी पर व्यंग्य करने के लिए लोकोक्ति का प्रयोग किया गया है।

कुछ अन्य लोकोक्तियों के उदाहरण -

'काला अक्षर भैंस बराबर', 'हाथ कंगन को आरसी क्या', (शरद जोशी); 'मैं मस्तानी रब्बा , मस्ताना यार मिले', 'पंचविशति वर्षों में द्वय और अर्धकोश ही चली', 'खाली दिमाग शैतान की दूकान होता है', (रवीन्द्रनाथ त्यागी); 'न घर का न घाट का रहना', 'घर में भूँजी माँग न होना', 'अधजल गगरी छलकत जाए', 'चुल्लुभर पानी में डूब मरना ' (लतीफ घोंघी); 'जाहि निकारो गेह ते कस न भेद कहि देय', 'न रहे बाँस न बजे बाँसुरि', 'एक ओर कुआँ दूसरी ओर खाई',(नरेन्द्र कोहली); 'बावन तोले पाव रती', 'मन चंगा तो कठौती में गंगा', (अमृत राय); 'हिम्मते मर्दा तो मददे खुदा', 'भैंस के आगे बीन बजाना', (शंकर पुणताम्बेकर); 'सावन के अंधे को हर जगह हरा ही हरा नज़र आता है', 'कन्या और गाय को कहीं भी खींच ले जाया जा सकता है', 'बहती गंगा में हाथ धोना', 'आँखों के अंधे और नाम नयन सुख', (सुदर्शन मजीठिया); 'सुबह का भूला यदि शाम को घर लौट आये तो उसे भूला नहीं कहते', 'एक तो चोरी ऊपर से सीना जोरी', 'मन चंगा तो कठौती में गंगा', 'खोदा पहाड़ निकली चुहिया', 'काला अक्षर भैंस बराबर', 'एक लुहार की सौ सुनार की', (रोशनलाल सुरीरवाला); 'आम के आम गुठलियों के दाम', 'बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद', 'न होगा बाँस न बजेगी बाँसुरी', 'हर्द लगे न फिटकारी रंग चोखा आवे', 'किसबी किसब करे तो साजे , नहीं तो मूँड मोंगरा बाजे', 'हिम्मते मर्दा तो मद्दे खुदा', 'जिन ढूँढा तीन पाइयाँ गहरे पानी पैठ' (बरसानेलाल चतुर्वेदी); 'खरबूजे को देख खरबूजा रंग बदलता है', 'न हींग लगे न फिटकारी और रंग भी गहरा निकल आए', 'काला अक्षर भैंस बराबर', 'मान न मान मैं तेरी महेमान', 'जल में रहना मगर से वैर', 'एक तरफ कुआं और दूसरी

और खाई', 'गंगा गए तो गंगादास , यमुना गए तो यमुनादास', (संसारचन्द्र), 'लड़का सीखे नाऊ का मूंडे कटे जजमान का', 'खर को कहा अरगजा लेपन', 'साझे की खेती गदहा भी नहीं चरता', 'जहाँ न जाय रवि तहा जाय कवि', (आत्मानन्द मिश्र); 'छठी का दूध याद कराना', 'अंधों के बीच काना राजा', 'गाँव का जोगिया आन गाँव का सिद्ध', 'दूर के ढोल सुहावने लगते हैं' (विश्वभावन देवलिया); 'काला अक्षर भैंस बराबर', 'मन चंगा तो कठौती में गंगा', 'आम के आम गुठलियों के दाम', 'धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का', (सूर्यबाला); 'नाच न आवे आंगन टेढ़ा', 'बगल में बच्चा, नगर में ढिंढोरा', 'मधुर बानी दगाबाज की निशानी', 'चार दिन की चांदनी, फिर अन्धियारी रात', (के. पी. सक्सेना); 'इक्का, वकील गधा पटना शहर में सदा','वक्त पड़ा बांका तो गधे को कहें काका', (मधुसूदन पाटिल); 'दूध-दहीं की नदियां बहना', 'कपड़ा फटा ग़रीबी आयी, जूती टूटी चाल गंवायी', (रामनारायण उपाध्याय); 'दिन दूनी रात चौगुनी', 'न घर के रहे न घाट के', 'काला अक्षर भैंस बराबर' (शेरजंग गर्ग); 'बंद मुट्ठी लाख की खुल गई तो खाक की' (हरि जोशी); 'जहाँ न पहुँचे रवि, वहाँ पहुँचे कवि', 'भैंस के आगे बीन बजाय' (विश्वेन्द्र महेता); 'सौ सुनार की एक लुहार की', 'सौ दिन सास के तो एक दिन बहू का', 'आम के आम गुठलियों के दाम', 'जर, जोरू और जमीन झगड़े की जड़ तीन', 'ऊपरवाला महेरबान तो गधा भी पहलवान', 'मुख से दु:ख रोय , ज्ञान गाँठ का रोय', 'सबसे अच्छा मूठ , जिन्हहि न व्यापक जगत गति', 'घूर के दिन भी फिरते है' (उमाशंकर चतुर्वेदी); 'बिन मांगे मोगी मिले मांगे मिले न भीख' (गिरीश पंकज) आदि।

हिन्दी व्यंग्य निबंधों में व्यंग्य के स्वभाव एवं लक्ष्य के अनुरूप भाषा के तेवरों को यथेष्ट मुद्रा प्रदान करने के लिइ व्यंग्यकारों ने अनेक रूप से लोकोक्तियों का प्रयोग किया है।

सूक्तियाँ

सूक्ति अर्थात उक्ति या कथन। सूक्ति पद या वाक्य के रूप होती है। मुहावरे तथा लोकोक्ति की तरह सूक्ति रूढ़ नहीं होती है। सूक्तियों के योग्य प्रयोग से विषय को संक्षेप में संप्रेषित कर सकते हैं। प्रसंगों के अनुसार साहित्यकार स्वयं इसे निर्मित करता है।

व्यंग्य निबंधों में व्यंग्यात्मक सूक्तियों का प्रयोग व्यंग्य को तीव्र और

प्रभावोत्पादक बनाने के लिए एक सशक्त साधन के रूप में किया गया है। साठोत्तर हिन्दी व्यंग्य निबंधों में सूक्ति प्रयोग अनेक रूप से दृष्टिगत होता है। इसके कुछ उदाहरण निम्नानुसार है-

"धर्म की नज़र अक्सर ऐसी विसंगत हो जाती है, जो पानी छानकर पीते हैं, वे आदमी का खून बिना छाने पी जाते है।"[157]

यहाँ जैन धर्म की रूढ़ियों तथा जैन धर्म के व्यापारी वर्ग पर व्यंग्यात्मक प्रहार किया है।

"स्वतंत्र्यता दिवस भीगता है गणतन्त्र दिवस ढिढुरता है।"[158]

"मुहल्ला ऐसा है कि लोग बारह-तेरह साल की बच्ची को घूर-घूर कर जबान बना देते है।"[159]

इस सूक्ति में सामाजिक बुराई को व्यंजित किया गया है।

"आलसियों की यथार्थवाद पर पकड़ हंमेशा मजबूत रहती है।"[160]

"इस देश में घर से राजपथ को जोड़ने के लिए मक्खन की पगडंडियां हैं।"[161]

"उत्तर दिशा पापात्माओं का केन्द्र है, दिल्ली राजधानी अधर्मियों का बड़ा अड्डा बन गयीहै।"[162]

ऊपर के दो सूक्तियों में राजनैतिक व्यंग्य किया गया है।

"हमारे देश में चूहों की जितनी अधिकता हैं, आंकडों की उतनी ही कमी हैं।"[163]

"चरित्रहिन तो केवल स्त्रियाँ होती है।"[164]

"कोफी हाउस में बुद्धिजीवी 'दोसा जीवी' हो जाते है।"[165]

"कोई भी समाज बिना सरकार के नहीं चल सकता और साहित्य जो है वह समाज का दर्पण होता है।"[166]

यहाँ समाज और सरकार के बीच के संबंध को व्यंजित किया है।

"जो दफ्तर जितना टुच्चा होता है, इसकी इमारत उतनी ही शानदार होती है।"[167]

यहाँ दफ्तर की कार्यप्रणाली के बारे में व्यंग्य किया गया है।

"अफसर का कुत्ता विकासशील देशों की तरह पनपता है।"[168]

"आज की परीक्षाएँ छात्रों के लिए भले ही बेकार हो, मास्टरों के लिए बड़े काम की है।"[169]

शिक्षण क्षेत्र में व्याप्त विसंगति को उजागर किया गया है।

"अभी तक इस देश के कानून में अदालत का अपमान करना ही जुर्म माना गया है, अदालत की चापलूसी करना नहीं।"[170]

अदालत में हो रहे गलत न्याय पर व्यंग्य किया गया है।

"खाली जेब रखकर आत्मविश्वास पैदा कर लेना ही जेब की राजनीति है।"[171]

"बंबई भागने वालों का तीर्थ है।"[172]

फ़िल्मी चमकदमक और अधिक पैसे कमाने की चाहत में अकसर लोग घर से बंबई भाग जाते है. इस बात पर यहाँ व्यंग्य किया गया है।

"सुविधायें पाने के लिए लोग अपना बाप भी बदल लेते हैं।"[173]

यहाँ सुविधा-पसंद और स्वार्थी लोगों की मनोवृत्ति पर व्यंग्य किया गया है।

"अपने देश में सबसे सस्ता चमड़ा आदमी का होता है।"[174]

इस सूक्ति में मानवी की कीमत को कौड़ी की बता कर व्यंग्य प्रस्तुत किया गया है।

"स्वतंत्रता जब ऊपर से टपकी तो लोगों ने गांधी टोपी फैलाकर उसे समेट लिया।"[175]

यहाँ अवसरवादी लोगों पर व्यंग्य किया गया है।

"अर्थशास्त्र का मूल सिद्धांत है कि धन 'वस्तु' बेचकर नहीं, अपनी आत्मा और अपना देश बेचकर कमाया जाता है।"[176]

धन कमाने के लिए मानव-मूल्यों का हनन हो रहा है। इस बात को यहाँ व्यंजित किया गया है।

"शांति स्थापित करने से वोट नहीं मिलते। वोट मिलते हैं दंगा करवाने से।"[177]

नेताओं द्वरा दंगा करवा के वोट लेने की प्रवृत्ति पर राजनैतिक व्यंग्य किया गया है।

"धर्म तो इस देश में 'वीटो' है - उसके सामने न कोई तर्क चलता है, न नियम, न कानून।"[178]

"चुनाव के अगले रोज तो वहीं मोटर जो अभी कल तक लोकतन्त्र की मोटर था, लोकतन्त्र का गदहा बन जाता है।"[179]

Smt. Hansa Mehta Library, The M.S. University of Baroda

"शादी लड़के के बाप की अढ़ाई दिन की राजधानी है जिसमें वह लड़की के बाप को प्रजा बनाकर एहसान की चोट लूटता है।"[180]

यहाँ शादी के समय लड़की के पिता की मनोस्थिति तथा दहेज जैसी सामाजिक समस्याँ पर मार्मिक व्यंग्य किया गया है।

"नौकरी तो अब चुनाव बन गई है जिसमें योग्य आदमी भ्रष्टाचारी का मुकाबला नहीं कर पाता।"[181]

यहाँ भ्रष्टाचार जैसी विसंगति पर व्यंग्य प्रहार किया गया है।

"मनुष्य जितना सामाजिक प्राणी नहीं उतना स्वार्थी प्राणी है।"[182]

"सिफारिश जमने की प्राणवायु है।"[183]

"चरित्रहीन कुलपति और प्रिंसिपल कैरेक्टर सर्टिफिकेट देते हैं।"[184]

"अक्कलमंद दूसरों के घोंसलों में अपने अंडे रखते हैं और अपनी कब्र में पड़ोसी को दफनाते हैं।"[185]

अक्लमंद लोग दूसरों को किस तरह बेवकूफ बनाते है, इस बात को इस सूक्ति में व्यंजित किया गया है।

"घिसा लेखक इतिहास हो जाता है इसलिए दोहराना उसकी नियति होती है।"[186]

"बचपन का सच किताबी निकला और यौवन का सच रोजी-रोटी से जुड़ गया।"[187]

व्यंग्यकार ने इस सूक्ति द्वारा जीवन की वास्तविकता को व्यंजित किया है।

"मूर्ख और शंख दूसरों के फूँकने से बजते हैं।"[188]

"ज्ञान की ज्योति जलानेवाला निर्धनता की चक्की में पिस रहा है।"[189]

"अक्कल को ताक पर रखकर हम कभी किस्मत की बाजी नहीं जीत सकते।"[190]

"अलेक्जेंडर पंजाब से आगे न जा सका क्योंकि चुंगीधरों पर चुकाते-चुकाते उसका खज़ाना खाली हो गया था।"[191]

"भूख से बड़ा भीड़ का लीड़र कोई नहीं है।"[192]

"आवश्यकता आविष्कार की जननी है।"[193]

"रोटी का सामाजीकरण हो यह बहुत स्वादिष्ट लगती है।"[194]

"जहाँ मुहल्ला होता है वहाँ कोई-न-कोई नेता अवश्य होता है।"[195]

"गालियाँ हमारी सांस्कृतिक धरोहर है।"[196]

अनावश्यक रूप से बढ़ रहे गालियों के प्रयोग पर व्यंग्य किया गया है।

"भारतवर्ष के नेताओं, दलालों, इंजीनियरो और ठेकेदारों का स्वर्ग कहा गया है, जबकि पुलिस का विनम्र निवेदन यह है कि इस लिस्ट में पुलिस कर्मियों का भी आलेख होना चाहिए।"[197]

".....भारत कभी कृषि-प्रधान देश था, आज क्रिकेट-प्रधान देश है।"[198]

भारत में व्याप्त अत्याधिक क्रिकेट प्रेम पर व्यंग्य किया गया है।

"इतिहास साक्षी है कि जब गीदड की सांसे घटती हैं, तो वह शहर की तरफ और आदमी की दौलत बढ़ती है, तो वह पहाड़ की तरफ भागता है।"[199]

"लाइन न हुई, द्रौपदी का चीर हो गई।"[200]

यहाँ लम्बी लाइन की समस्या को सूचित किया है।

"जिस तरह गायकी में ग्वालियर, किराना और बनारस घराने प्रमुख है, उसी तरह मनुष्य रूपी सामाजिक प्राणी को भी किसान, पूंजीवादी और दफ्तर घराने में बांटा जा सकता है।"[201]

इस सूक्ति के द्वारा खोखली सामाजिक व्यवस्था पर व्यंग्य किया गया है।

"संसार में जूता ही एक ऐसी चीज़ है, जिसे खाया भी जा सकता है और पहना भी जा सकता है।"[202]

"कितनी ही बिगड़ी हुई लड़की हो उसका चरित्र शादी होते ही सावित्री ब्रांड हो जाता है।"[203]

"टिकिट सिनेमा का हो या चुनाव का, घुसपैठ का ग्रीस लगाइये, बुकिंग-विंडो पर पहुँच जाइये और यकीनन कामयाबी पाइये।"[204]

"बुजुर्गियत और निरीहता शराफत की निशानी कतई नहीं है।"[205]

"गरीबी-रेखा द्रौपदी का चीर हो गई है जितना घटाते हैं वह उतनी ही बढ़ती जाती है।"[206]

यहाँ बढ़ती जा रही गरीबी समस्याँ पर व्यंग्य किया गया है।

"राजनीति में खटिया खड़ी होती है, कुर्सी और पद-प्राप्ति के बाद अक्सर व्यक्ति का चरित्र स्वाहा होता है।"[207]

राजनीति में पद-प्राप्ति के पश्चात व्यक्ति के चारित्रिक गुणों का हनन होता है, इस बात को इस सुक्ति में व्यंजित किया है।

"ॠण ही एक ऐसा जाल है, जिसके माध्यम से 'धन' और 'मूल धन' को कृपा पूर्वक उलीचने की सुविधा मिलती है।"[208]

"हमारा देश धर्मप्राण देश कहलाता है, क्योंकि यहाँ धर्म की रक्षा के लिए

प्राण लेने और देने का सिलसिला जमाने से चला आ रहा है।"[209]

इस सूक्ति में धर्म के नाम पर हो रहे दंगे-फसात पर व्यंग्य किया गया है।

"अध्यापक नालायक विद्यार्थिओं को ट्यूशन पढ़ा-पढ़ाकर लायक बना देते हैं और यदि कोई विद्यार्थी अपनी ट्यूशन को धारावाहिक रूप से चला नहीं पाता तो उसे फेल होने की संभावनाएँ सिर उठाने लगती है।"[210]

यहाँ शिक्षण जगत में व्याप्त ट्यूशन प्रथा जैसी विसंगति पर व्यंग्य किया गया है।

सारांशत: कहा जा सकता है कि हिन्दी व्यंग्य निबंधों में सूक्तियों के योग्य प्रयोग द्वारा सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, शैक्षणिक, प्रशासनिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्र में व्याप्त विसंगतियों को प्रहारात्मक रूप से अभिव्यंजित किया गया है। व्यंग्य निबंध में सूक्तियों के प्रयोग से व्यंग्यकार अपनी अभिव्यक्ति को सूत्रत्मकता, संक्षिप्तता और मार्मिकता जैसे शैलीय गुणों से व्यंग्य को आकर्षक और प्रभावोत्पादक कर सका है।

परिभाषा

परिभाषा का अर्थ है - किसी भी वस्तु के वास्तविक गुण और स्वभाव का परिचय या अर्थ कथन। भिन्न-भिन्न साहित्यकार एक ही वस्तु या परिस्थिति की अलग-अलग परिभाषा दे सकता हैं। परिभाषा रूढ नहीं होती। परिभाषा ज्यादातर एक या दो वाक्यों में दी जाती है। संक्षिप्तता इसका आवश्यक तत्त्व है।

व्यंग्यकारों ने विसंगतियों को यर्थाथ के धरातल पर प्रस्तुत करने के लिए व्यंग्यात्मक परिभाषाओं का प्रयोग किया है। व्यंग्य निबंधों में व्यंग्यात्मक परिभाषाओं का प्रयोग प्राय: सर्वत्र प्राप्त होता है। इसके कुछ उदाहरण यहाँ दृष्टव्य हैं-

<u>इस्लाम</u> - "इस्लाम कोड़े लगाना, हाथ काटना, आँखें निकाल लेना है। इस्लाम बुर्का है।"[211]

यहाँ इस परिभाषा के द्वारा इस्लाम धर्म की रूढ़ियों तथा विसंगतियों पर व्यंग्य किया गया हैं।

<u>(जाँच) कमीशन</u> - "कमीशन वह गली है, जिसमें से सरकार छिपकर निकल जाती है क्योंकि आम सड़क समस्याएँ जमघट किये हैं।"[212]

"कमीशन से मेरा अभिप्राय सयानों की उस बैढ़क से है जो कि दिये गये प्रश्न का इतिहास और भूगोल, भूत और भविष्य, भूमिका और उपसंहार - इन सब

पर रिपोर्ट तैयार करती है और फिर उसकी जिल्द बँधवाकर सरकार को पेश करती है।"[213]

ऊपर दी गई 'कमीशन' विषयक परिभाषाओं में प्रशासनिक क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार को व्यंजित किया गया है।

दिल्ली – "दिल्ली एक काम्प्लेक्स है, एक ग्रन्थि है, दिल्ली एल सिल्ली है सीने पर रखी हुई। दिल्ली भूस का लड्डू जिसे न आप खा सकते हैं और न छोड़ सकते हैं।"[214]

दिल्ली राजनीति का मुख्य प्रवेश द्वार है। इसीलिए इसकी और प्रत्येक नेता का आकर्षण होना आवश्यक है। इसी बात को यहाँ व्यंजित किया है।

"ब्रह्मचारी वे हैं जो फाइल रूपी कन्या को कभी हाथ नहीं लगाते। आकाशचारी वे हैं जो ऊपर-ही-ऊपर अपनी जड़े, मजबूत करते हैं और बिना कुछ कियेधरे एक के बाद एक सीढ़ी पार करते चले जाते हैं। सदाचारी वे हैं जो इस्तेमाल किये हुए कारतूस की भाँती बेकार हैं।"[215]

अखबार – "अखबार का मतलब है कि सुबह की चाय के प्याले पर कुछ रचनात्मक घटनाओं की सूचना मिले जैसे हत्या, कालापानी, दंगे या बालात्कार।"[216]

अखबार हंमेशा हिंसा की खबरों से ही भरा होता हैं। यहाँ परिभाषा द्वारा इसी बात को सूचित किया गया है।

अस्पताल – "अस्पताल उस जगह का नाम होता है जहाँ आदमी बीमारी की हालत में दाखिल होता है और फिर मुर्दा होकर बाहर निकलता है।"[217]

"अस्पताल वह स्थल है, जहाँ भारतीय मरीज़ को जीवन और मृत्यु से संघर्ष करने का सुनहरा मौका अवसर प्राप्त होता है।"[218]

पड़ोशी – "पड़ोशी वह होता है, जो न स्वयं चैन से बैठ, न दूसरे को परेशान करना छोड़े।"[219]

अश्लील – "जो सबको अच्छा लगे और कोई न माने वही अश्लील है।"[220]

बंगला – "बंगला वह ऊँची जगह है जहाँ महल के आकाश से गिरा प्रजातंत्र अटका हुआ है।"[221]

कालेज – "कालेज वे कारखाने हैं, जो कच्चे माल को पक्का बनाकर उन्हें डिग्रियाँ प्रदान कर नौकरी के बाज़ार में सतत धकेलते रहते है।

कोलेज में दी जा रही बनावटी डिग्रियों के व्यापार पर व्यंग्य किया गया है।

"सफल गुंडे लीडर कहलाते हैं और असफल लीडर गुंडे कहलाते हैं।"[223]

इस परिभाषाओं में 'लीडर' तथा 'गुंडों' के बीच की समानता को व्यंजित किया गया है।

"जो परीक्षार्थियों को बिलकुल तंग नहीं करता और उनको राहों पर चलने देता है खुद भी (यदि याज्ञ हो) परीक्षार्थियों के प्रश्नों का उत्तर खोजवाने का कार्य करता है और फल की इच्छा नहीं रखता और इस प्रकार भगवान कृष्ण के गीता के मार्ग पर चलने वाला उत्तम कोटि का इन्वीजिलेटर होता है।"[224]

इस परिभाषा के द्वारा शिक्षण क्षेत्र में व्याप्त विसंगति को उजागर करने का प्रयास किया गया है।

जन्न - "साधारण बोलचाल में तो शक को 'जन्न' कहते हैं।"[225]

कंजिटेंसी - "पेटर्न का दूसरा नाम कंजिस्टेंसी हैं। कंजिटेंसी तो यह भी है कि आदमी बेहोश हो गया है वह मर जाये।"[226]

"उन्नीस की उम्र में दिल में दर्द हो तो उसे इश्क कहते हैं और पचास की उम्र में दिल में दर्द उठे तो उसे हार्ट-अटैक कहते हैं।"[227]

कदाचार - "अफसर फाइल सरकाने के लिए रिश्वत लेता है या मंत्री ट्रांसफर कराने के लिए फीस लेता है ये कदाचार है।"[228]

प्रशासन में फैले भ्रष्टाचार तथा रिश्वत जैसी विसंगतियों को व्यंजित करने के लिए यह परिभाषा दी है।

विद्यार्थी - इस शब्द को लेकर भी अटकल मत लगाइए। इसका सीधा अर्थ है विद्या+अर्थी अर्थात् विद्या की अर्थी उठाने वाला है, जो प्रकारान्तर से कहें तो विद्या का अर्थी उठाने में सहायक है।"[229]

प्रार्थना - "सब अपने अपने कम्पनी के धर्म की क्वालिटी का गुणगान करते हैं, जिन्हें प्रार्थनाएँ कहा जाता है।"[230]

इस व्यंग्यात्मक परिभाषा के द्वारा धार्मिक रूढ़ियों तथा विषमताओं को उजागर किया गया है।

होटल - "होटल वह स्थान है, जहाँ चुल्हे की आग के सिवा कुछ भी गर्म नहीं रहता है।"[231]

पी एच.डी. - "अंग्रेजी के घास खोदने की इसी परंपरा को रिसर्च और प्रकारान्तर से पी·एच.डी. कहते हैं।"[232]

शोधकार्य में हो रही बेईमानी तथा शिक्षण क्षेत्र में व्याप्त विसंगतियों को व्यंजित करने के लिए ऊपरोक्त परिभाषा दी है।

"..... 'आमदनी' उसे कहते हैं जिसमें गुजारा नहीं किया जा सके और जिसके बिना गुजारा भी न हो सके; उसी तरह मौलिक उसे कहते हैं जिसमें कही गयी बात और दिये गये विषय का समन्वय स्थापित नहीं किया जा सकता हो।"[233]

"यह माना जाता रहा है कि खेत में फसल, खाद, खर-पतवार तथा ढोर-डंगर के अलावा जो पाया जाता है, वही किसान है।"[234]

"पीठासीन अधिकारी उस व्यक्ति को भी कहा जाता है, जो चार पोलिंग अधिकारियों, पटवारी, कोटवार तथा तीन-चार पुलिस के जवानों के समूह का नेतृत्व करता हुआ मतदान की प्रक्रिया को संपन्न करवाता है और लगभग एक हजार मतदाताओं के मत, मतपेटी में प्राप्त कर जिलाध्यक्ष कार्यालय तक पहुंचाता है।"[235]

प्रशासनिक क्षेत्र में व्याप्त विसंगतियों को उजागर करने के लिए यह व्यंग्यात्मक परिभाषा दी है।

अफसर - "जो व्यक्ति कार्यालय में ग्यारह बजे के बजाय एक बजे पहुंचे तथा शाम को पांच के बजाय तीन बजे ही घर चल दे, उसे अफसर कहते है।"[236]

इस परिभाषा द्वारा कामचोर अफसर तथा प्रशासनिक विसंगतियों पर व्यंग्य किया गया है।

समाजवाद - "समाजवाद वह है जिस में समाज का विचार बाद में किया जाता है।"[237]

समाजबाद की व्यंग्यात्मक परिभाषा द्वारा समाज में मानव-मूल्यों में आये परिवर्तन को रेखांकित किया गया है।

प्रेस - "लोकतंत्र की छत्र जिन चार खंभो पर टिकी है, उसमें से एक खंभा प्रेस कहलाता है। प्रेस के दायरे में पूरी दुनिया आती है।"[238]

सास - "सास उस प्राणी का नाम है, जो बहू का जीना हराम करने के काम आता है।"[239]

बरसों से चले आ रहे सास-बहू के संबंध को परिभाषित किया गया है।

चपरासी - "दफ्तर की फाइलों के आवक-जावक की गति को नियंत्रित करने में गति अवरोधक का काम करने वाले जीव को चपरासी कहा जाता है।"[240]

जब तक आप चपरासी को रिश्वत नहीं देत तब तक आपकी फाइल अफसर के टेबल तक नहीं पहुँच पायेगी। चपरासी की इसी वृत्ति को परिभाषा के माध्यम से अभिव्यंजित किया गया है।

सारांशत: कहा जा सकता है कि व्यंग्यकारों ने यथार्थ परिस्थिति तथा विसंगतियों का व्यंग्यात्मक चित्रण प्रस्तुत करने के लिए परिभाषाओं का प्रयोग किया हैं।

काव्य-पंक्तियाँ

हिन्दी व्यंग्य निबंधों में व्यंग्य को रोचक तथा प्रभावशाली बनाने के उदेश्य से विविध काव्य पंक्तियों का चयन भी किया है। इसके कुछ उदाहरण यहाँ दृष्टव्य हैं।

'कैकयी कुपति है' निबंध में नेताओं के चरित्रको रामायण के पात्र में ढाल कर व्यंग्य किया है। कैकयी यानी चरणसिंह के कोप का वर्णन करने के लिए तुलसीदास के 'रामचरित्मानस' की पंक्तियों का चयन किया है। यथा -

"बार-बार कह राह सुमुखि,
सुलोचनि, पिकवचनि
कारन मोहि सुनाउ
गजगामिनी निज कोप कर।"[241]

(यहाँ प्रसंग यह है कि दशरथ राजा रूठी हुई कैकयी को कोपभवन में मनाने जाते है; उसी प्रकार दशरथ यानी मोरारजी भाई रूठी हुई कैकयी यानी चरणसिंह को मनाने जाते है।)

"पैरिस की शान क्या मेरी दतिया के सामने
तख्ते सुलेमाँ क्या मेरी खटिया के सामने
फिरंगी की तोप क्या मेरी लठिया के सामने
जन्नत की हूर क्या मेरी पठिया के सामने !"[242]

ऊपर की पंक्तियों का प्रयोजन व्यंग्य निबंध में हास्य उत्पन्न करने के लिए किया गया है।

"चला गया वह
मुझमें नहा कर
फैला गया सारा प्रदूषण
मुझमें
यह जान कर भी कि मैं
साहित्य नहीं,

नदी हूँ
गंदला कर गया मुझे
अपनी कविताओं से
सारा कलुष, सारा मैल
बहा कर
चला गया वह
मुझ में नहा कर।"[243]

हिन्दी साहित्य अभद्र और अशिष्ट कविताओं से गंदा हो रहा है। यहाँ इन काव्य पंक्तियों के प्रयोग द्वारा साहित्यिक क्षेत्र में व्याप्त विसंगतियों पर मार्मिक व्यंग्य प्रहार किया गया है।

"नई भेजे पतिया
आयल चैत उतपतिया हो राम।-
नई भेजे पतिया;
विरही कोयलिया सबद सुनाती
कल न पड़े अब रतिया हो रामा-"[244]

'उत्तर की प्रतिक्षा में' निबंध में प्रयुक्त इन लोकगीत की पंक्तियों के द्वारा पत्र लिखकर उत्तर की प्रतीक्षा करनेवालों पर व्यंग्य किया गया है।

जुआँरियों की मनस्थिति पर व्यंग्यकार ने तुलसीदास तथा मीरा की काव्य-पंक्तियों के द्वारा व्यंग्य किया है। यथा -

"एक जुआँरी सारी रात जुआँ खेलता रहा है और हारता रहा है। सबेरा होते-होते एक दाँव वह जीत जाता है और उसके हाथ कोई रत्न लग जाता है। उसकी मनोवृत्ती तुलसी की पंक्तियों से प्रकट होती है -

अब लौं नसानी अब ना नसै हों।
पायो नाम चारू चितामनी डर कर ते न खसैहौ।

मीराबाई ने भी एक ऐसे ही जुआँरी के उल्लास का वर्णन किया है जो पहले बहुत कुछ खो चुका है पर चलते-चलते जिसके हाथ एक उम्दा दाँव लग गया है :

"पयोजी मैंने नाम रतन धन पायो।
.... जनम जनम की पूँजी पायी जग मैं सभी खोवायो।"[245]
"नारि मुई गृह संपत्ति नासी"
अथवा चमचम चमके अपार माया

"कैसे (T) तूने आकाश बनाडडया
शमा जलाया, फर्श बिछाया
बादल हिलहिल जल बरसाडडड या"[246]

जब नया जुता काटता है तो इसके दर्द के कारण आदमी को अनायास ही ईश्वर की याद आती हैं। यह बात को इस पंक्ति में व्यंजित किया है। यथा –

"जब दिया रंज बुतों ने तो खुदा याद आया।"[247]

"जिसको तेरी आँखों से सरोकार रहेगा।
बिल फर्ज जिया भी है तो वो बीमार रहेगा।"[248]

"भेड़ियों के अश्क ढ़ोते हो, गजब करतें हो।
सरकार पे यकीन रखते हो, गजब करते हो।"[249]

सरकार की बात पर अविश्वास प्रदर्शित् करने के लिए इन पंक्तियों का प्रयोग हुआ है।

"दूध न पचता कब्ज से, 'भीमसेन' बीमार।
काने हैं 'पंकजनयन' 'हरिश्चन्द्र' मुख्त्यार।।
छै मन की है 'फूल कुमारी'। घास बेचती 'राज दुलारी'।
'मधु', 'माधुरी', 'सुधा' कटु बैना। नैनहीन सुन्दरी 'सुनैना'।।[250]

यहा गुण से विपरीत नामकरण करके हास्य मिश्रित व्यंग्य किया गया है।

"बल्व है वेश्या,
गुण्डे परवाने
छा गये चहुँ दिस।
धर-पकड, आ गई
छिपकली की पुलिस।"[251]

"एक जननायक को दुनिया में भला क्या चाहिए
चार छः चमचे रहें, माइक रहे माला रहे।"[252]

आज के युग में एक नेता की आवश्यकता क्या है? इस बात को पंक्तियों में व्यंजित किया है।

"गधों का ही दुनिया में जीना सरल है,
गधे हों तो हर झोंपड़ी भी महल है,
उठा जब उठाया, चला जब चलाया,
सभी कुछ नकल है,

बस गधा ही अकल है।"[253]

इन पंक्तियों में मुर्खों पर व्यंग्य किया गया है।

"पहले चू - चू कर बुलाते और फिर करते हैं हा।
आज की दुनिया का ऐसा आदमी चूहा हुआ।"[254]

यहाँ आदमी पर चूहें का आरोप करके, मनुष्य की मनोवृत्ति पर व्यंग्य किया है।

"वस्तुत: 'नमस्तेजी' एक अनमोल धन है, जो व्यय करने पर बढ़ता है, न व्यय करने पर घटता है। वास्तव में-

नमस्ते करके सब तरे, नमस्ते से बढ़ा नाम।
नमस्ते किए कुछ न घटा, कह गए आत्माराम।।"[255]

'नमस्ते' बोलने के फायदे को यहाँ सूचित किया गया है।

"चाँद को देखा किये हसरते-दीदार से
चाँद का टुकडा मिला और हम भी गंजे हो गये।"[256]

इन पंक्तियों द्वारा व्यंग्यकार ने अपने गंजेपन पर आत्म व्यंग्य किया है।

"सावन का महीना आते ही इंजीनियराइन (इजीनियर की पत्नी) मगन हो जाती है -

"सावन का महीना पवन करे शोर,
रूपयों से भर जाये यह सूना घरवा मोर।"[257]

सावन के महिने में अधिक वर्षा के कारण नदी में बाढ़ आती है, तब इंजीनियर्स को बाँध बनाने तथा उसकी मरम्मत करने का कोटा मिलता है। इससे इजीनियरर्स को काफी दो नंबर की कमाई का लाभ मिल जाता है। इस बात को इन काव्य पंक्तियों में व्यंजित किया है।

"नेता ऐसो चाहिए,
खान-पान न सिद्ध।
दूरदृष्टि ऐसी रहै,
जैसे कोई गिद्ध।"[258]

नेता की दृष्टि में क्या विशेषता होनी चाहिए इस बात को इन, पंक्तियों में अभिव्यंजित किया गया है।

"सब कुछ है मेरे देश में, रोटी नहीं तो क्या;
वादे ही लपेट लो, लंगोटी नहीं तो क्या।"[259]

इन पंक्तियों के द्वारा नंगे चरित्र के नेताओं पर करारा व्यंग्य किया गया है।

इस प्रकार अपने लक्ष्य की अभिव्यक्ति को मार्मिक और चोटदार बनाने के लिए व्यंग्य निबंधकारों ने साहित्य और साहित्येत्तर जगत से अनेक कवियों की काव्य पंक्यियों का भी भरपूर उपयोग किया है।

पैरोडी - प्रयोग

'पैरोडी' किसी भी रचना के शब्दों को उलट-पलट कर या उसकी नकल द्वारा प्रस्तुत की जाती है। पैरोडी शब्द अंग्रेजी भाषा का है। भारतेन्दु ने इसे 'आभास' नाम दिया है तथा रामकुमार वर्मा ने इसके लिए 'परिहास' शब्द का प्रयोग किया है। किन्तु "पैरोडी" शब्द ही हिन्दी साहित्य में अधिक प्रचलित रहा है।

'पैरोडी' व्यंग्य को अभिव्यंजित करने का सशक्त उपकरण है। व्यंग्यकारों ने विसंगतियों तथा विद्रुपताओं पर रोचक तथा प्रहारात्मक व्यंग्य करने के लिए अनेक स्थानों पर 'पैरोडी - प्रयोग' किया है। हिन्दी व्यंग्य निबंध साहित्य में भी व्यंग्यकारों ने इसका प्रयोग करना उचित समझा है। इसके कुछ उदाहरण यहाँ दृष्टव्य है -

'प्रधानमन्त्रित्व ही जीवन है' निबंध में नचिकेता-यम संवाद की पैराडी की है। नेता के लिए पद से हटा दिया जाना मृत्यु है और वही नेता का प्रधानमंत्री बनना जीवन है। इस विषय के संदर्भ में यहाँ व्यँग्य किया गया है।

"नचिकेता ने पूछा-मृत्यु क्या है? यम ने जवाब दिया मैं ब्रह्माण्ड के दौरे पर हूँ और मुझे बताया जाये कि मैं पद से हटा दिया गया। यही मृत्यु है। और जीवन क्या है? यम ने कहा प्रधानमंत्री रहना ही जीवन है।"[260]

तुलसीदास के पद की पैरोडी देखिए -

"चित्रकूट के घाट पर भइ लुच्चन की भीड़!"[261]

पहले जहाँ संतन की भीड़ रहा करती थी, आज वहाँ लुच्चों अर्थात् स्वार्थी मनुष्य की भीड़ जमा रहती है। इस बात को यहाँ सूचित किया है।

"सुभाष बोस ने नारा दिया था - तुम मुझे खुन दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा। तीसरी आजादी का नेता उठेगा। वह नारा देगा-तुम मुझे ईमान दो, मैं तुम्हें शक्कर दूँगा।"[262]

इस पैरोडी द्वारा भ्रष्टाचार पर व्यंग्य किया गया है।

"धर्म-गुरूओं से जिमी कार्टर कहेंगे जीसस ने यह गलत कहा था कि पिता

उन्हें माफ कर, क्योंकि वे नहीं जानते वे क्या कर रहे हैं। रूसी जानते हैं कि वे क्या कर रहे हैं। उन्हें कतई माफ मत करना। हाँ, हम नहीं जानते, हम क्या कर रहे हैं।"[263]

इशु को जब शूली पर चढ़ाया गया था तब उन्होंने उनको मारनेवालों के प्रति जो सहानुभूति परक वाक्य बोले थे उनकी पैरोडी यहाँ दी गई है।

"दृश्य यों होता है। गणेशजी बैठे हैं ऊपर। तेजी से दानों पर नाम लिखने में लगे हैं।..... चूहा नीचे बैठा है। बीच-बीच में गुहार लगाता है, हमारा भी ध्यान रखना प्रभु, ऐसा न हो कि चूहों को भूल जाओ। इस पर गणेशजी मन ही मन मुस्कराते हैं। उनके दाँत दिखाने के और हैं, मुस्कराने के और।"[264]

यहाँ 'हाथी के दाँत दिखाने के और है, खाने के और' कहावत की पैरोडी की गई है। इसके द्वारा चमचागीरी तथा छल-कपट जैसी आदमी की मनोवृत्ति पर व्यंग्य किया गया है।

"दस साल की लम्बी अवधि में दिन रात साथ देने वाला वह कुत्ता आज भगवान को प्यारा हो गया था और स्थिति वह थी की उस युवती के भूतपूर्व पति, वर्तमान पति और होने वाले पति सब-के-सब उस अबला को वराबर ढाढस बँधा रहे थे, पर वे थीं कि रोते ही जाती थीं। उनके आँचल में दूध हो या न हो, पर उनकी आँखों में पानी पानी काफी था।"[265]

मैथलीशरण गुप्ता की पंक्ति "आँचल में है दूध, आँखों में है पानी" की पैरोडी क़ी गई है। जिसमें मनुष्य से अधिक कुत्तों की मौत पर आँसु बहानेवाले लोगों पर व्यंग्य किया है।

"इस प्रकार इंडिकेट - सिंडीकेट का परताव गली-कूचों तक में दिखाई दे रहा है। अब तो जनाब यह हालत हो गई है कि 'इंडिकेट-सिंडीकेट मय सब जग जानीं।'"[266]

'सियाराम मय सब जग जानी' चौपाई की पैरोडी द्वारा राजनीतिक विसंगति पर व्यंग्य किया गया है।

"सच, मुझे लग रहा था कि मैं और बैठा रहा तो लाटरी का दीवाना हो जाऊँगा और मीराबाई की तरह गली-गली गाता फिरूँगा -

"हेरी मैं तो लाटरी दीवाना मेरा दरद न जाणा कोय।"[267]

मीरा के पद की पैरोडी की गई है। इसके द्वारा लाटरी खरीदनेवाले तथा उसके लग-जाने के सपने देखनेवालों पर व्यंग्य किया गया है।

"सहकारिता-क्षेत्र के माफियों का सबसे अच्छा रेट चल रहा है। कबीरदास की उलटबाँसियों की तरह इनकी कला को समझना मुश्किल है। इस क्षेत्र के माफिया स्वरूप एवं दिखने में डरावने होते है। सहकारी समितियाँ, मार्केटिंग फेडरेशन, कार्पोरेशन के गोदाम इनकी रंगस्थलियाँ हैं। "जाको राखे सहकारिता मार सकता कोय।"[268]

'जाको राखे साइया मार सके न कोय' उलटबाँसी की परौडी द्वारा माफिया के फैले हुए साम्राज्य पर व्यंग्य किया है।

"प्रभुजी मेरे अवगुन चित न धरो।
मैं चुनाव में फेरि खरो भयो, अबकी पार करो।
एक नर है इक नारि कहावत जानत जग सबरो।
वोट देन को एक बरन भये, इनको वोटर नाम परो।
वोटर सबरे पारस जैसे, कंचन मोहि करो।
अबकी बार मोहि पार उतारो, मेरे मूड पै हाथ धरो।"[269]

सूरदास के पद की पैरोडी नैताओं द्वारा वोटरों को रिझाने की प्रवृत्ति पर व्यंग्य किया गया है।

"हे पार्थ! क्रिकेट मैच देखकर तो तू और भी कुंठित, और भी शोचनीय स्थिति को प्राप्त हो गया। अत: अब मेरे लिए आवश्यक है कि तेरे समक्ष आत्मज्ञान अर्थात् विभिन्न प्रकार की आत्माओं के ज्ञान का दर्शन करूँ, साथ ही कर्म और अकर्मण्य-यज्ञ की व्याख्या भी। इससे तेरा चित शोकरहित होगा और तू आनंद को प्राप्त होगा।"[270]

यहाँ गीता की उपदेशपरक शैली की पैरोडी की है।

"सुबह से शाम तक राम-राम करनेवाले ऐसे-ऐसे श्रेष्ठ लोग हैं, जिनके कुल की रीति है वचन जाये पर माल न जाये।"[271]

यहाँ 'प्राण जाये पर वचन न जाये' की पैरोडी द्वारा पाखंडी तथा भ्रष्टाचारी लोगों पर व्यंग्य किया है।

"अफसर तो तुम्हारे लिए भगवान है। फिर तुमने ही तो कहा था, 'सारी खुदाई एक तरफ, अफसर चमचाई एक तरफ।"[272]

'सारी खुदाई एक तरफ, जोरू का भाई एक तरफ' कहावत की पैरोडी की गई है। इसके द्वारा दफ्तरों में कर्मचारियों की अपने अफसर के प्रति चमचागीरी को व्यंजित किया गया है।

'पैरोडी' विविध क्षेत्र में व्याप्त विसंगतियों को उजागर करने का एक सशक्त माध्यम है। वाक्यांश, वाक्य, सूक्ति, मुहावरा, कहावत, गीत, चौपाई, दोहा, पुराण कथा, जातक कथा, हितोपदेश, गीता आदि का आधार लेकर हिन्दी के व्यंग्य निबंधों मे अनेक पैरोडी रूप की सुन्दर प्रस्तुतियाँ व्यंग्य को धारदार बनाने के उदे्श्य से की गई है।

व्यंग्य निबंधों में विविध शब्द चयन तथा विविध भाषिक उपकरणों का चयन व्यंग्य को संप्रेषित करने के लिए महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ है। इनके प्रयोग से विविध क्षेत्र मे व्याप्त विसंगतियों तथा विषमताओं पर करारा व्यंग्य प्रहार किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ-सूची

1) डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी, हिन्दी व्यंग्य के प्रतिमान (1988) पृ - 105-106.

2) हरिशंकर परसाई, पगडण्डियों का जमाना, पृ-11

3) हरिशंकर परसाई, परसाई रचनावली-4, (1985), पृ-170 'मानव आत्मा और अमेरिकी हूटर'

4) शरद जोशी, हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे, (1999), पृ-124, 'तुम कब जाओगे, अतिथि'

5) शरद जोशी, यथासम्भव (1985), पृ-196, 'शस्त्र-पूंजा'

6) रवीन्द्रनाथ त्यागी, पूरब खिले पलाश (1999), पृ-193, 'सरल हिन्दी के पक्ष में एक खुला पत्र'

7) वही, पृ-123, 'उत्तर की प्रतिक्षा में'

8) लतीफ घोंघी, मेरी प्रिय व्यंग्य रचनाएं, (1991), पृ-86, 'हिन्दी दिवस थाने में'

9) अमृतराय, विजिट इण्डिया (1982), पृ-48, 'बिजली यानी बिजली'

10) सुदर्शन मजीठ़िया, छींटे, पृ-130, 'गाँव'

11) रोशनलाल सुरीरवाला, ये माँगने वाले, पृ-11, 'अभिमन्यु दाक्षिण्य-पर्व'

12) डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी, फिल्मावलोकन (1996), पृ-48, 'फिल्मावलोकन के फायदे'

13) सूर्यबाला, अजगर करे न चाकरी (1989), पृ-139, 'अथ मरणोपरांत'

14) गिरीश पंकज, भ्रष्टाचार विकास प्राधिकरण (1994), पृ-39

15) संसारचन्द्र, महामुर्ख मंडल, पृ-21, 'अवकाश-प्राप्ति के अवसर पर'

16) रवीन्द्रनाथ त्यागी, पूरब खिले पलाश, पृ-80, 'हिन्दी दिवस'

17) नरेन्द्र कोहली, जगाने का अपराध (1973), पृ-108, 'जीवन का मिशन'

18) अमृतराय, विजिट इण्डिया (1982), पृ-98, 'एक लाल झंडी खतरे की'

19) आत्मानंद मिश्र, बे बात की बात, पृ-47, 'जल्दबाजी'

20) बरसानेलाल चतुर्वेदी, मुलाकात मुफ्तखोरों से, (1990), पृ-58, 'फेबीकोल तथा चौबेजी'

21) वही, चौबेजी की डायरी, पृ-16, 'किस्से जँवाईलालों के'

22) मधुसूदन पाटिल, देखन में छोटे लगें, पृ-94, 'नया साल मुबारक'

23) अमरेन्द्र कुमार, दूसरों के जरिये, पृ-61, 'बंद होना कोफी हाउस का'

24) गिरीश पंकज, भ्रष्टाचार विकास प्राधिकरण, पृ-13, 'परीक्षा क्षेत्रे कुरूक्षेत्रे'

25) हरिशंकर परसाई, परसाई रचनावली-4, पृ-329, 'हमारी भाषा पर अंग्रेजी प्रभाव'

26) वही, पृ-37, 'कविवर अटल बिहारी'

27) शरद जोशी, जीप पर सवार इल्लियाँ' पृ-25

28) रवीन्द्रनाथ त्यागी, पूरब खिले पलाश (1999), पृ-246, 'देवदार के पेड़'

29) संसारचन्द्र, महामूर्ख मंडल, पृ-10, 'हथेली पर सरसों'

30) लतीफ घोंघी, व्यंग्य चरितम्, पृ-75

31) लतीफ घोंघी, मेरी प्रिय रचनाएँ, पृ-81, 'एक धार्मिक बस की कथा'

32) नरेन्द्र कोहली, जगाने का अपराध (1973), पृ-33, 'रिसर्च-एक्सपीरिएन्स'

33) अजातशत्रु, आधी वैतरणी, पृ-16, 'सत्यनारायण की कथा पर मेरी जासूसी फिल्म'

34) शंकर पुणताम्बेकर, पतनजली (1996), पृ-99, 'प्रेमविवाह'

35) सुदर्शन मजीठिया, टेलीफोन की घण्टी से (1983), पृ-68,

36) बरसानेलाल चतुर्वेदी, मुलाकात मुफ्तखोरों से, पृ-66, 'माफिया-मीमांसा'

37) सूर्यबाला, अजगर करे न चाकरी, पृ-34, 'साब का बुद्धिजीवियों से'

38) के. पी. सक्सेना, मूंछ मूंछ की बात, पृ- 9, खाली डिब्बे में ताकझाँक'

39) मधुसूदन पाटिल, हम सब एक हैं, पृ-32.

40) रामनारायण उपाध्याय, बख्शीशनामा, पृ-42 'उन्नत खेती और अनुदान का बैल'

41) श्यामसुन्दर घोष, प्रेम करने की उमर, पृ-52, 'अखबार'

42) शेरजंग गर्ग, दौरा अन्तर्यामी का, पृ-108, 'रोजगार राजा का'

43) श्रवणकुमार उर्मलिया, लक्ष्मीजी मृत्युलोक में, पृ-82, 'बिना पूछ के कुत्ते'

44) डॉ. आत्माराम, जब मैं लिखता हूँ, पृ-17, 'मैं बडा आदमी हूँ'

45) निरज व्यास, भरे पेट का चिन्तन, पृ-20, 'देशप्रेम के नशे'

46) जगतसिंह बिष्ट, तिरछी नज़र, पृ-23, 'मंत्री महोदय की यमलोक में छवि'

47) रवीन्द्रनाथ त्यागी, पूरब खिले पलाश, पृ-275, 'विविध प्रसंग'

48) आत्मानंद मिश्र, बे बात की बात, पृ-69, 'हाज़िर-ज़वाबी'

49) नरेन्द्र कोहली, जगाने का अपराध, पृ-36, 'बात'

50) बरसानेलाल चतुर्वेदी, चौबेजी की डायरी, पृ-4, 'मंत्री, माशूक और चमचागीरी'

51) जगतसिंह बिष्ट, तिरछी नज़र, पृ-82, 'प्रमोशन, डिनर और जिमी'

52) शरद जोशी, हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे, पृ-52, 61, 66, 96, 120, 120

53) रवीन्द्रनाथ त्यागी, पूरब खिले पलाश, पृ-32, 70, 91, 255

54) शंकर पुणताम्बेकर, बदनामचा, पृ-19, 35, 35, 38, 49, 49, 53, 61, 108

55) श्यामसुन्दर घोष, खिन खारा, खिन मीठा, पृ-27, 27, 27, 27, 27, 55

56) प्रेम जनमेजय, शर्म मुझको मगर क्यों आती, पृ-29, 58

57) रामनारायण उपाध्याय, बख्शीशनामा, पृ-22, 27, 50, 67, 67, 67

58) नरेन्द्र कोहली, आत्मा की पवित्रता, पृ-12, 12, 12, 19, 19

59) सूर्यबाला, अजगर करे न चाकरी, पृ-12, 13, 69, 121, 143, 143, 159, 159

60) अश्विनी कुमार दुबे, अटैची संस्कृति, पृ-21, 37, 57

61) अलका पाठक, गार्ड रक्षित दफ्तरे, पृ-9, 10, 14, 66

62) भरतराम भट्ट, अवसरवादी बनो, पृ-17, 18, 64, 79, 79, 79, 82

63) मधुसूदन पाटिल, देखन में छोटे लगें, पृ-69, 'ईश्वर आपकी यात्रा सफल करे'

64) के पी.सक्सेना, मूँछ मूँछ की बात, पृ-22, 'उन्हें सुर मिल गया'

65) रवीन्द्रनाथ त्यागी, देवदार के पेड़, (1973), पृ-77

66) सूर्यबाला, अजगर करे न चाकरी, पृ-128, 'सोफानामा'

67) विश्वेन्द्र मेहता, मारने दो हमे छक्का, पृ-49, 'शीघ्र, अतिशीघ्र, शीघ्रतिशीघ्र'

68) रूपनारायण वर्मा, साहिब बाथरूम में हैं, पृ-30, 'साहिब पूजा कर रहे हैं'

69) हरिशंकर परसाई, पगडण्डि का जमाना, पृ-35, 36

70) हरिशंकर परसाई, अपनी अपनी बिमारी, पृ-52

71) शरद जोशी, यथासंभव, (1985), पृ-23, 'हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे'

72) अमृतराय, विजिट इण्डिया, पृ-83, 'बस मानो बाइस्कोप'

73) वही, पृ-89, 'पिरथी भगत ने जब एक दिन खुश होकर छोटे लाटसाहब को चिट्ठी लिखी'

74) बरसानेलाल चतुर्वेदी, 'द' से दलाल, पृ-76, 'कदाचार, सदाचार और आम का आचार'

75) बरसानेलाल चतुर्वेदी, भोला पण्डित की बैठक, पृ-44, 45

76) के.पी. सक्सेना, मुँछ मुँछ की बात, पृ-13, 'चश्मे-बददूर यानी चश्मे से दुर'

77) वही, पृ-66, 67, 'अथ श्री गुझियाए नमः'

78) संसारचन्द्र, सोने के दाँत, (1985), पृ-44, 45, 'समाचार पत्र'

79) श्रवणकुमार उर्मलिया, लक्ष्मीजी मृत्युलोक में, पृ-22, 'आजादी-चिंतन'

80) वही, पृ-34, 'लक्ष्मीजी मृत्युलोक में'

81) हरिशंकर परसाई, उनके दिन फिरे, पृ-85

82) लतीफ घोंघी; बुद्धिजीवी की चप्पलें, पृ-114, 'हाय कैसे कटेंगे ये पांच साल'

83) वही, पृ-117, 'अरे वाह रे जागरूक मतदाता'

84) नरेन्द्र कोहली, जगाने का अपराध, पृ-61, 'बाढ़ का नियन्त्रण'

85) वही, पृ-1, जगाने का अपराध

86) नरेन्द्र कोहली, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनायें, पृ-11, 'रिश्तों से बढ़कर'
87) अमृतराय, विजिट इण्डिया, पृ-41, 'मृच्छकटिकम् उर्फ मिट्टी की गाड़ी'
88) वही, पृ-62, 'जलतरंग'
89) अजातशत्रु, आधी वैतरणी, पृ-34, 'राजा हरिश्चन्द्र के आंसू'
90) सुदर्शन मजीठिया, छींटे, पृ-84, 'आदमी बनाम बंदर'
91) श्याम सुन्दर घोष, प्रेम करने की उम्र, पृ-99, 100, 'बांस और बंधनखा'
92) ज्ञान चतुर्वेदी, दंगे में मुर्गा, पृ-50, 'सती प्रथा के पक्ष में'
93) श्रवण कुमार उर्मलिया, लक्ष्मीजी मृत्युलोक में' पृ-22, 'आजादी चिंतन'
94) गिरीश पंकज, भ्रष्टाचार विकास प्राधिकरण, पृ-30, सामाजिक पतन से दुखी 'पतितों से मुलाकात'
95) जगतसिंह बिष्ट, तिरछी नज़र, पृ-54, 'बड़े साहब का आतंक'
96) वही, पृ-56
97) हरिशंकर परसाई, परसाई रचनावली भाग-4, पृ-98, 'राजनीतिक गाँजा'
98) वही, पृ-67, 'ऐसा भी सोचा जाता है'
99) शरद जोशी, यथासंभव (1985), पृ-72, 'खूब गुज़रे ये वर्ष'
100) रवीन्द्रनाथ त्यागी, पूरब खिले पलाश (1999), पृ-195, 'सरल हिन्दी के पक्ष में एक खुला पत्र'
101) श्रीलाल शुक्ल, यहाँ से वहाँ, पृ-92, 'मृत्यु: एक दिग्दाशनिक निबन्ध'
102) लतीफ घोंघी, व्यंग्य चरितम्, पृ-29
103) शंकर पुणताम्बेकर, पतनजली, (1996), पृ-100, 'प्रेमविवाह'
104) सुदर्शन मजीठिया, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनायें, पृ-80,
105) सुदर्शन मजीठिया, डिस्को कल्चर, पृ-10, 'गधे'
106) प्रेम जनमेजय, मैं नहीं माखन खायो, पृ-12, 'आह दिल्ली, वह दिल्ली!'
107) बरसानेलाल चतुर्वेदी, मुलाकात मुफ्तखोरों से, पृ-122, 'फ्लोप होना जनसंपर्क-सभा का'
108) बरसानेलाल चतुर्वेदी, 'चौबेजी की डायरी', पृ-41, 'सुदामा और कृष्ण एक विद्यालय में कब पढ़ेंगे'
109) संसारचन्द्र, 'सोने के दाँत, पृ-27,28, 'यह दिल्ली है'
110) आत्माराम मिश्र, बे बात की बात, पृ-82, 'कमेटी कला'

111) अजातशत्रु, आधी वैतरणी, पृ–47, 'यशोधरा का गृह–त्याग'
112) वही, पृ–50, 'सुदामा का एक्सटैंशन'
113) बालेन्दु शेखर तिवारी, फिल्मावलोकन, पृ–43, 'फिल्मावलोकन के फायदें'
114) सूर्यबाला, अजगर करे न चाकरी, पृ–113, 'चोटी पर न पहुँचे हुए लोग'
115) मधुसूदन पाटिल, 'देखन में छोटे लगे', पृ–50, 'नशा अंग्रेजी बोलने का'
116) के.पी.सक्सेना, मूँछ–मूँछ की बात, पृ–92, 'कस्बा और फिल्म लैन'
117) शेरजंग गर्ग, दौरा अन्तर्यामी का, पृ–44, 'स्वास्थ्य प्रश्नोत्तरी: अस्वास्थ्य उत्तरोत्तरी'
118) गिरीश पंकज, भ्रष्टाचार विकास प्राधिकरण, पृ–26, 'अफसर की कार में सवार 'टीपू' का सलाम'
119) भरतराम भट्ट, अवसरवादी बनो, पृ–76, 'भ्रष्टाचार का भार'
120) बालेन्दु शेखर तिवारी, हिन्दी व्यंग्य के प्रतिमान, पृ–106,
121) बृहद हिन्दी कोश (ज्ञान मंडण्डल, बनारसी), 820
122) हरिशंकर परसाई, परसाई रचनावली भाग–4, पृ–190, 'लाह पुरूष और मोम–पुरूष'
123) हरिशंकर परसाई, शिकायत मुझे भी है, p-101, 'गालिब की परसाई'
124) शरद जोशी, यथासम्भव, पृ–20, 'जैसे श्वान काँच–मन्दिर में'
125) रवीन्द्रनाथ त्यागी, पूरब खिले पलाश, पृ–121, 'उत्तर की प्रतिक्षा में'
126) वही, पृ–292-293, 'जूते'
127) लतीफ घोंघी, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचना, पृ–57, 'बब्बू मियां क़ब्रिस्तान में'
128) लतीफ घोंघी, मेरी श्रेष्ठ व्यग्य रचना, पृ–30
129) अमृतराय, विजिट इण्डिया, पृ–45, 'बिजली यानी बिजली'
130) शंकर पुणताम्बेकर, शतरंज के खिलाडी, पृ–83, 'ग्राम सामुद्रिक'
131) सुदर्शन मजीठिया, पब्लिक सैक्टर का साँड, पृ–88,
132) सुदर्शन मजीठिया, टेलीफोन की घंटी, पृ–67
133) बरसानेलाल चतुर्वेदी, मुलाकात मुफ्तख़ोरों से, पृ–75, 'नाक, नाक का बाल और नाक में दम'
134) संसारचन्द्र, महामुर्ख मण्डल, पृ–7, 'हथेली पर सरसों'
135) आत्मानन्द मिश्र, बे बात की बात, पृ–159
136) सूर्यबाला, अजगर करे न चाकरी, पृ–178, 'क' से कफ्यू 'का' से काला

जाल'
137) शेरजंग गर्ग, दौरा अन्तर्यामी का, पृ-55, 'बाज़ार से गुजरा हूँ'
138) वही, पृ-78, बिछाने की तहज़ीब
139) श्रवणकुमार उर्मलिया, लक्ष्मीजी मृत्यु लोक में, पृ-74, 'वे हमारे तथाकथित ज्ञाता-दाता'
140) अमरेन्द्र कुमार, दूसरों के जरिये, पृ-67, 'कुर्सी यानी मौज'
141) हिन्दी साहित्य कोश (भाग-1), पारिभाषिक शब्दावली, (ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वारणसी), पृ-754
142) हरिशंकर परसाई, परसाई रचनावली भाग-4, p-247, 'राष्टसंघ के इन भुक्खड सदस्यों को भगा दो'
143) वही, पृ-41, 'हास्यास्पद अच्छी बात'
144) शरद जोशी, यथासंभव, पृ-18, 'भैंसन्हि माँह रह नित बकुला'
145) रवीन्द्रनाथ त्यागी, शोक सभा, पृ-50, 'अपना देश: चिन्तन के कुछ क्षण'
146) रवीन्द्रनाथ त्यागी, पूरब खिले पलाश, पृ-271, 'विविध प्रसंग'
147) नरेन्द्र कोहली, आधुनिक लड़की की पीड़ा, पृ-14, 'सन्तों की बिल्लियाँ और चूजे'
148) सुदर्शन मजीठिया, डिस्को कल्चर, पृ-21
149) संसारचन्द्र, महामुर्ख मण्डल, पृ-8, 'हथेली पर सरसों'
150) अजातशत्रु, आधी वैतरणी, पृ-82, 'बयान जारी है'
151) प्रेम जनमेजय, शर्म मुझको मगर क्यों आती, पृ-30, 'भैंस, तुम कितनी खूबसूरत हो'
152) बरसानेलाल चतुर्वेदी, मुलाकात मुफ्तखोरों से, पृ-15, 'जीवन मूल्यों का वैकुंठ गमन'
153) वही, पृ-28, 'उन्हें नेता होने का भ्रम है'
154) सूर्यबाला, अजगर करे न चाकरी, पृ-68, 'रंगबदल नीति और खरबूजे'
155) शेरजंग गर्ग, दौरा अन्तर्यामी का, पृ-78, 'बिछने तहज़ीब'
156) विश्वेन्द्र महेता, मारने दो हमें छक्का, पृ-9, 'च से चमचा'
157) हरिशंकर परसाई, बेईमानी की परत, पृ-24
158) हरिशंकर परसाई, निठल्ले की डायरी, पृ-7, 'साहब महात्वकांक्षी'
159) हरिशंकर परसाई, प्रतिनिधि व्यंग्य, पृ-113

160) शरद जोशी, जीप पर सवार इल्लियाँ', पृ-30
161) शरद जोशी, पिछले दिनों, पृ-8
162) शरद जोशी, यथासंभव, पृ-107, 'एक शंख बिन कुतुबनुमा'
163) रवीन्द्रनाथ त्यागी, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ, पृ-6, 'एक जरूरी बयान'
164) वही, पृ-66, 'बारिश का एक दिन'
165) रवीन्द्रनाथ त्यागी, पूरब खिले पलाश, पृ-193, 'शाम हो गयी'
166) वही, पृ-245, 'देवदार के पेड़'
167) श्रीलाल शुक्ल, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ, पृ-67
168) वही, पृ-78
169) वही, पृ-108
170) श्रीलाल शुक्ल, यहाँ से वहाँ, पृ-101, 'एक मुकदमा'
171) लतीफ घोंघी, नीर-क्षीर, जेब की राजनीति
172) लतीफ घोंघी, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचना, पृ-69
173) लतीफ घोंघी, टुटी टाँग पर चिंतन , पृ-71
174) लतीफ घोंघी, मेरी प्रिय व्यंग्य रचनाएँ, पृ-100, 'चमड़े का सिक्का'
175) नरेन्द्र कोहली, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएं, पृ-91, 'कबूतर'
176) वही, पृ-140, 'खोज गरीबों के कारण की'
177) नरेन्द्र कोहली, आत्मा की पवित्रता, पृ-65, 'नेता के लक्षण'
178) नरेन्द्र कोहली, जगाने का अपराध, पृ-80, 'कर्तव्यनिष्ठ पड़ोशी'
179) अमृतराय, बतरस (1973), पृ-105.
180) शंकर पुणताम्बेकर, शतरंज के खिलाड़ी, पृ-12, 'बारात में'
181) वही, पृ-60, 'एक बस यात्रा'
182) वही, पृ-75, 'नया वर्ष और बधाई पत्र'
183) वही, पृ-155, 'सिफारिश'
184) सुदर्शन मजीठिया, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएं, पृ-13
185) वही, पृ-34
186) प्रेम जनमेजय, राजधानी में गंवार, पृ-100
187) वही, पृ-35
188) रोशनलाल सुरीरवाला, भिश्ती और भस्मासुर, पृ-64
189) संसारचन्द्र, सोने के दाँत, पृ-56, 'मास्टरजी'

190) संसारचन्द्र, महामूर्ख मंडल, पृ-38, 'समझदारी : वरदान अथवा अभिशाप?'
191) आत्मानंद मिश्र, बात का बतंगड़, पृ-20
192) अजातशत्रु, आधी वैतरणी, पृ-80, 'हमें एक कटोरा बहस दो'.
193) वही, पृ-96, चमड़े के सिक्के
194) विश्वभावन देवलिया, राग यूनियन कार्बाइड, पृ-22, 'जिसकी डण्डी उसकी हण्डी'
195) प्रेम जनमेजय, राजधानी में गंवार, पृ-98, 'हाय तेल! वाह तेल!'
196) बरसानेलाल चतुर्वेदी, मुलाकात मुफ्तखोरों से, पृ-84, 'गाली विशेषण और वी.आई.पी.
197) बालेन्दु शेखर तिवारी, मेरी प्रिय व्यंग्य रचनाएँ, पृ-82,
198) सूर्यबाला, अजगर करे न चाकरी, पृ-151, 'मेरा क्रिकेट प्रेम'
199) के.पी. सक्सेना, मूँछ मूँछ की बात, पृ-27, 'पहाड़ जाने की इल्लत'
200) गिरीश पंकज, भ्रष्टाचार विकास प्राधिकरण, पृ-23, 'राशन की लाइन में'
201) जगतसिंह बिष्ट, तिरछी नज़र, पृ-13, 'जीना यहाँ, मरना यहाँ
202) निरज व्यास, भरे पेट का चिंतन, पृ-36, 'जरूरत जूता क्रांति की'
203) विश्व मोहन माथुर, क्षमा याचना सहित, पृ-59, 'चिंतनदास से ज्ञान-चर्चा'
204) विश्वेन्द्र महेता, मारने दो हमें छक्का, पृ-27, 'घुसपैठ'
205) श्रवणकुमार उर्मलिया, लक्ष्मीजी मृत्युलोक में, पृ-115, 'शराफत से आफत'
206) उमाशंकर चतुर्वेदी, तोप और तोपचन्द, पृ-10, 'रेखाओं में रेखा, गरीबी रेखा'
207) हरि जोशी, भेड़ की नियति, पृ-116, 'केशव के शन अस करि' पर केशवदासजी से वार्ता
208) रामनारायण उपाध्याय, बख्शीशनामा, पृ-123, 'ॠण लीजिए, धन गवाइए'
209) मधुसूदन पाटिल, देखन में छोटे लगें, पृ-40, 'मजहब नहीं सिखाता'
210) शेरजंग गर्ग, दौरा अन्तर्यामी का, पृ-31, 'क्या नहीं होता'
211) हरिशंकर परसाई, परसाई रचनावली भाग-4, पृ-151, 'इस्लाम के कोड़े'
212) वही, पृ-34, 'जाँच कमीशन: सरकार का कुल्ला'
213) रवीन्द्रनाथ त्यागी, पूरब खिले पलाश, पृ-60, 'लेखक आयोग की नियुक्ति: एक आफिस नोट'
214) शरद जोशी, यथासंभव, पृ-77, 'हर फूल दिल्ली मुखी'

215) रवीन्द्रनाथ त्यागी, पूरब खिले पलाश, पृ-126, 'निराशा के क्षण'
216) वही, पृ-107. 'भुखमरी की खबरें'
217) वही, पृ-272, 'विविध प्रसंग'
218) लतीफ घोंघी, मेरी प्रिय व्यंग्य रचनाएँ, पृ-45, 'अस्पताल'
219) वही, पृ-83, कर्तव्यनिष्ठ पड़ोसी
220) अमृतराय, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएं, पृ-31
221) शंकर पुणताम्बेकर, पतनजली, पृ-136, 'राग अधिकारी'
222) सुदर्शन मजीठिया, पब्लिक सैक्टर का सांड, पृ-74
223) सुदर्शन मजीठिया, इंडिकेट बनाम सिंडीकेट, पृ-84
224) प्रेम जनमेजय, व्यंग्य एक और एक, पृ-87
225) संसारचन्द्र, महामूर्ख मण्डल, पृ-84, 'मेरा शक्की पड़ोशी'
226) अजातशत्रु, आधी वैतरणी, पृ-56, 'आंदोलन का लाइन-क्लियर'
227) प्रेम जनमेजय, शर्म मुझको मगर क्यों आती, पृ-9, 'सुंदरता खरीदो, सुंदरता बेचो'
228) बरसानेलाल चतुर्वेदी, 'द' से दलाल, पृ-75, 'कदाचार, सादाचार और आम का आचार
229) सूर्यबाला, अजगर करे न चाकरी, पृ-108, 'अथ कलियुग गुरूदेव रासो'
230) मधुसूदन पाटिल, देखन में छोटे लगे, पृ-42, 'मजहब नहीं सिखाता'
231) बालेन्दु शेखर तिवारी, बिना यात्रा की यात्रा, पृ-35
232) बालेन्दु शेखर तिवारी, पी. एच. डी. पर एक रिसर्च, दृष्टव्य : श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य निबंध, पृ-65, संपा. काका हाथरसी / गिरिराज शरण अग्रवाल
233) रामनारायण उपाध्याय, बख्शीशनामा, पृ-9, 'जरा मौलिक सोचिए'
234) ज्ञान चतुर्वेदी, दंगे में मुर्गा, पृ-9, 'किसान: एक परिचय'
235) हरि जोशी, भेड़ की नियति, पृ-51, 'पीठासीन अधिकारी : कितनी है जिम्मेदारी'
236) वही, पृ-106, 'अ' से अफसर'
237) पारूकान्त देसाई, कबीरा खड़ा बाज़ार में, पृ-7, 'मैं सिद्धान्तवादी हूँ . ..'
238) विश्वमोहन माथुर, क्षमा याचना सहित, पृ-45, 'पत्रकारिता और अरूण शौरी'
239) श्रवणकुमार उर्मलिया, लक्ष्मीजी मृत्युलोक में, पृ-98, 'विवाह पर मात्र दो

शब्द'

240) जगतसिंह बिष्ट, तिरछी नज़र, पृ-85, 'दफ्तर का सुख'

241) हरिशंकर परसाई, परसाई रचनाचली भाग-4, पृ-55, 'कैकयी कुपित है'

242) वही, पृ-39, 'कविवर अटलबिहारी'

243) शरद जोशी, यथासंभव, पृ-239. 'नदी में खड़ा कवि'

244) रवीन्द्रनाथ त्यागी, पूरब खिले पलाश, पृ-123, 'उत्तर की प्रतीक्षा में'

245) श्रीलाल शुक्ल, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएं, पृ-73, 74, 'दीवाली जुओ और कविगण'

246) केशवचन्द्र वर्मा, मृग छाप हीरो, पृ-17

247) संसारचन्द्र, सोने के दाँत, पृ-10, 'ए-वन जूता'

248) अमृतराय, विजिट इण्डिया, पृ-102, 'एक लाल झड़ी खतरे की'

249) प्रेम जनमेजय, शर्म मुझको मगर क्यों आती?, पृ-34, 'चौक्के और छक्के का चक्कर'

250) रोशनलाल सुरीरवाला, खाट पर हजामत, पृ-70, 'नाम महात्म्य'

251) रोशनलाल सुरीरवाला, ये माँगने वाले, पृ-42

252) बररानेलाल चतुर्वेदी, 'द' से दलाल, पृ-41. 'माइक-महात्म्य'

253) मधुसुदन पाटिल, देखन में छोटे लगें, पृ-30, 'मुर्खिस्तान की सैर'

254) श्याम सुन्दर घोष, खिन खारा, खिन मीठा, पृ-56, 'चूहा साम्राज्य'

255) आत्माराम, जब में लिखता हूँ, पृ-26, 'नमस्ते'

256) श्रवणकुमार उर्मलिया, लक्ष्मीजी मृत्युलोक में, पृ-65, 'जाकी रही भावना जैसी'

257) अमरेन्द्र कुमार, दूसरों के जरिये, पृ-32, 'हे बाढ़, तुम्हारा अभिनन्दन'

258) गिरीश पंकज, भ्रष्टाचार विकास प्राधिकरण, पृ-107, 'नेता ऐसो चाहिए'

259) निरज व्यास, भरे पेट का चिन्तन, पृ-91, 'एक शायराना बजट'

260) हरिशंकर परसाई, परसाई रचनावली भाग-4. पृ-64, 'प्रधानमंत्रीत्व ही जीवन है'

261) वही, पृ-101, 'लुच्चन की भीड़'

262) वही, पृ-182. 'अभाव की दाद'

263) वही, पृ-185, 'बोक्कसर महम्मद अली'

264) शरद जोशी, यथासंभव, पृ-14, 'अथ गणेशाय नमः'

265) रवीन्द्रनाथ त्यागी, पूरब खिले पलाश, पृ-64, 'उनका कुत्ता मर गया था... .'

266) सुदर्शन मजीठिया, 'इंडिकेट बनाम सिंडिकेट', पृ-81

267) प्रेम जमनेजय, शर्म मुझको मगर क्यों आती?, पृ-34, 'चौक्के और छक्के का चक्कर'

268) बरसानेलाल चतुर्वेदी, मुलाकात मुफ़्तखोरों से, पृ-65, माफिया-मीमांसा

269) वही, पृ-81. 'मन रे परस वोटर चरन.....'

270) सूर्यबाला, अजगर करे न चाकरी, पृ-12, 'अथ अकर्मण्य यज्ञ - उपदेशामृत'

271) मधुसूदन पाटिल, देखन में छोटा लगे, पृ-40, 'मजहब नहीं सिखाता'

272) गिरीश पंकज, भ्रष्टाचार विकास प्राधिकरण, पृ-27, 'अफसर की कार में सवार 'टीपू' को सलाम'